अरफ़ात किरण

दीन–ए–इस्लाम की जामेईयत

"इस्लाम तौहीद–ए–ख़ालिस का दीन है, वह ख़ुदा और बन्दे के दरमियान किसी वास्ते और "एजेंसी" का क़ायल नहीं, वह किसी ऐसी महसूस और माद्दी चीज़ का रवादार नहीं जिसको इन्सान अपने फ़िक्र व ख़्याल में माबूद की तरह बसाकर अपनी सारी तवज्जे और हिम्मत व क़ूव्वत उस पर मज़कूर कर दे और उसके दाम से वाबस्ता हो जाए, इसमें न तो वास्तों की गुंजाइश है न मज़ाहिर की, न तस्वीरों की न बुतों की, न यहां पादरी व पुरोहित के क़िस्म का कोई तबक़ा पाया जाता है, न काहिनों और मुजावरों के तर्ज़ की कोई जमाअत, यह एक ऐसा दीन है जो ख़्याल की पाकी, फ़िक्र की बुलन्दी, नियत व इरादे की सफ़ाई और दुरुस्ती, ग़ैर से बेतअल्लुक़ी और अमल में इख़्लास के उस मेयार और फ़िक्र व अक़ीदे की उस सतह पर है जिससे बेहतर मेयार और बुलन्द सतह नाक़ाबिले तसव्वुर है, दुनिया के तमाम मज़ाहिब, फ़लसफ़े, दीनी और अक़्ली निज़ाम और पूरी इन्सानियत मिलकर भी आज तक उस जैसी कोई चीज़ पेश करने से क़ासिर रही और उसके मेयार के क़रीब भी उसकी रसाई न हो सकी।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

आप स०अ० की सीरत और उसकी माँग

सीरत की तक़रीब बहुत मुबारक, और आप स०अ० के ज़िक्र की नूरानियत व बरकत में एतराज़ किसको हो सकता है। लेकिन क्या ये सिर्फ़ हमारे लिये ज़रूरी है, हमारे बच्चों के लिये नहीं जो मुश्रिकों के स्कूल में शिक्षा प्राप्त करके अब नबियों को अवतार कहने लगे हैं?क्या ये काफ़ी है कि साल भर में कुछ दिन जश्न मना कर हम इत्मिनान से सो जायें और अपने कान और दिल व दिमाग़ की खिड़की ही बन्द कर लें? अगर हमारी नयी नस्ल जिस पर मिल्लते इस्लामी हिन्द के पूरे भविष्य का दारोमदार है अपने रसूल स०अ० की सीरत और शिक्षा से बेगाना हो जाती है तो ये सीरत के ईमान में बढ़ोत्तरी करने वाले जलसे और तक़रीरें और ये जश्न व चिराग़ां आख़िर किस मन्तिक़, दानिशमन्दी, और फ़हम व फ़रासत की रौ से जायज़ और किस क़ानून के तहत ठीक होगा?अगर ये मसला करोड़ों रूप्ये खर्च करके और हज़ारों लाखों कारकुनानों और तवील और सख़्त जद्दोजहद के बाद भी हल हो जाता तब भी हमको इस नाज़ुक और अहमतरीन मसले के लिये एक व्यक्ति की तरह खड़े हो जाना चाहिये था, लेकिन इस सूरते हाल में जबकि इसके लिये इस क़दर कसीर और ख़तीर सरमाया की ज़रूरत नहीं, इसकी तरफ़ से ग़फ़लत व बेपरवाही बहुत बुरी बात है और बहुत ख़तरे की बात है।

मौलाना सैय्यद मुहम्मदुल हसनी रह०

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:3 मार्च 2023 ई0 वर्ष:15

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

सम्पादक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

सह सम्पादक
मो0 नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मुद्रक
मो0 हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

सुन्नत की अहमियत

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

(तुम अपने ऊपर मेरे और मेरे ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन मेहदीयीन के तरीक़े की पैरवी लाज़िम पकड़ना, उसको दांतों से मज़बूती से थामे रहना और दीन में नई बातों (बिदअत) से अपने आप को बचाना, इसलिए कि हर बिदअत गुमराही है)

(सुनन इब्ने माजा: 44)

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू0पी0.229001

प्रति अंक 15रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू0

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

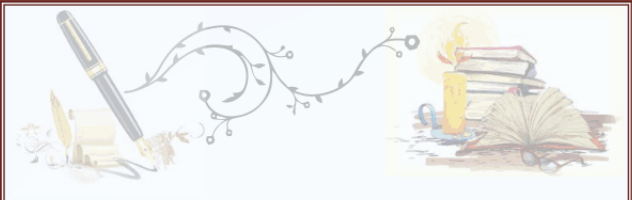

हयात-ए-इश्क़ का ऐजाज़

प्रोफ़ेसर रशीद कौसर फ़ारूक़ी

हाय क्या शै है हयात-ए-इश्क़ का ऐजाज़ भी
साज़ में एक सोज़ भी है, सोज़ में एक साज़ भी

ग़ौर से सुनिए, बड़ी सोख़्शि बड़ा हंगामा है
इतनी आवाज़ों में होगी दिल की एक आवाज़ भी

हुस्न क्या हौसला क्या बेख़ुदा तहज़ीब का
पांव भी ताऊस के, ताऊस की परवाज़ भी

हम सफ़ीरों आओ उन तारों की दुनिया में चलें
ढूंढ ले अपनी ज़मीं की पस्तियों का राज़ भी

ज़िन्दगी फ़िक्र व अमल के ज़ेर व बम का नाम है
ये सुकूने साज़ भी है इज़्तिराबे साज़ भी

एक मंज़िल आई, ठहरे और आगे बढ़ गए
यानि हर अंजाम है अपनी जगह आग़ाज़ भी

बर महल जब पुरफ़िशानी का सलीक़ा ही नहीं
शामते परवाज़ है यह हसरते परवाज़ भी

कोई जुगनू ही से तहज़ीबे तमन्ना सीख ले
रोशनी का एक दरीचा बन्द भी, एक बाज़ भी

ख़ुद फ़रेबी की यह रंगीनी कहां रह जाएगी
डर रहा हूं खुल न जाए मुझ पर मेरा राज़ भी

इस अंक में:

उम्मत के तहफ्फुज़ व बक़ा का राज़ (संपादकीय) 3

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिन्दुस्तान में इस्लाम की दावत व तब्लीग़.....4

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी

इन्सानी तआउन की अहमियत.....6

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इख़्लास और रियाकारी.....8

मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

तक़वा क्या है?.....9

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुहिम का पसेमंज़र 11

जनाब आरिफ़ अज़ीज़

तौहीद वेदों में.....13

मौलाना मुसव्विर आलम नदवी

दीनी इस्तिक़ामत और ईमान की अहमियत 14

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

कुल मुसलमान – मुकम्मल इस्लाम 15

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

इस्लामी में सफ़ाई सुथराई 17

मौलाना अली मियाँ (रह0) – बहैसियत नाज़िम नदवतुल उलमा...19

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

सम्पादकीय

उम्मत के तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा का राज़

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

यह उम्मत उम्मत–ए–दावत है और यही इसकी ख़ैर उम्मत होने की खुली हुई निशानियों में से है। दावत ही से उसकी बक़ा मौजूद है। जो क़ौमें दावती मिज़ाज रखती है वह ज़िन्दा रहती हैं। वरना वह बर्फ़ की तरह पिघल जाती हैं। इस उम्मत को अल्लाह तआला ने क़यामत तक ज़िन्दा रहने के लिए पैदा फ़रमाया है, इसीलिए रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की बेसत के साथ–साथ अल्लाह तआला ने दावती मिज़ाज रखने वाली एक ऐसी जमाअत तैयार कर दी जिसने दुनिया के बड़े हिस्से को बहुत कम मुद्दत में दावत आशना बना दिया। उनका एक–एक फ़र्द तहरीक बन गया। जो काम बड़ी–बड़ी तहरीकातें नहीं कर सकतीं, वह काम एक–एक फ़र्द ने करके दिखाया। यह उम्मत जब तक अपने दावती मिशन के साथ आगे बढ़ती रही, इसको कोई ताक़त रोक नहीं सकी। दावत की इस ताक़त ने तस्ख़ीरे आलम का काम किया लेकिन जब इसकी दावती स्प्रिट में कमी आने लगी, धीरे–धीरे वही उम्मत जिसका नाम सिक्का–ए–रवां की तरह चलता था, जिसके रोब से सल्तनते कांपती थीं, यूरोप जिसकी ग़ुलामी को अपने लिए क़ाबिले फ़ख़्र समझता था, जिसके ईजादकर्दा उलूम–फ़ुनून पर आज की तरक़्क़ी की दुनिया है, उसने अपना मक़ाम खो दिया। क़ौमें उस पर टूट पड़ीं। उसकी ताक़त ताश के पत्तों की तरह बिखर गई। ख़िलाफ़ते इस्लामिया का निशान मिट गया और ग़ुलामाना ज़हनियत रखने वाले वह हुक्काम मुसल्लत कर दिये गए जो पूरी इस्लामी तारीख़ के लिए किसी कलंक के टीके से कम नहीं।

दावत अपने में हो या ग़ैरों में यह एक अहमतरीन दीनी फ़रीज़ा है। उम्मत के तहफ़्फ़ुज़ व बक़ा का राज़ भी इसी में मुज़मर है। बक़ाए आलम की मौजूदा कोशिशों में यह फ़िक्र भी पेश की जाती है कि हर मज़हब वाला अपने मज़हब पर अमल करे कोई किसी को न रोके न टोके, ताकि हर शख़्स आज़ादी के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके, इस्लाम में इसका तसव्वुर भी मुमकिन नहीं, हो सकता है कि किसी ज़रूरी मस्लहत की ख़ातिर किसी इलाक़े में महदूद वक़्त के लिए इस पर अमल कर लिया जाए लेकिन इस्लामी मिज़ाज से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं। भलाई की तलक़ीन करना, उसका माहौल बनाना, उसको आम करने की कोशिश करना मुसलमानों के फ़राएज़ मंसबी में दाख़िल हैं। बुराई को बुराई समझना, उसको बुरा कहना, माहौल को उससे पाक करने की कोशिश करना मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है।

मौजूदा मुस्लिम मुआशरो में यह ख़राबी बढ़ती चली जा रही है कि बुराईयों को देखकर दिन हीं कांपता। इसका एहसास ख़त्म होता चला जा रहा है। वह मुआशरा किसी मुसलमान मुल्क का हो या दूसरे मुल्क की मुस्लिम आबादियों का, कोई बुराई दाख़िल होती है, फिर बढ़ते–बढ़ते वह सबको अपने लपेटे में ले लेती है। ज़ाहिर तौर पर दीनदार लोग इसमें मुब्तिला हो जाते हैं। इसकी बुनियादी वजह यह है कि पहले ही मरहले में इसको रोकने की कोशिश नहीं की जाती। यह एक ऐसा ख़तरनाक सिलसिला है जो इरतिदाद तक पहुंचा सकता है और इस दौर में इस्लाम दुश्मन ताक़तों ने यही हरबा इस्तेमाल किया है कि मुसलमानों में एक–एक करके ऐसी बुराइयां आम की जाएं कि आहिस्ता–आहिस्ता उनकी इस्लामी पहचान मिटती चली जाए और कुछ अर्से के बाद उनके अन्दर का एहसास भी ख़त्म हो जाए।

यह एक नफ़्सियाती चीज़ है कि इन्सान जिस माहौल में रहता है उसका आदी बन जाता है, गंदे माहौल में रहने वाले गन्दगी को महसूस नहीं कर पाते। जो लोग अंधेरे में रहते हैं उनको अंधेरे की शिद्दत का एहसास नहीं होता, लेकिन जो लोग रोशनी से अंधेरे में जाते हैं वह एक क़दम आगे नहीं बढ़ा सकते, यही हाल उन मुनकिरात का है जो मुआशिरे में आहिस्ता–आहिस्ता पनपती हैं और उनकी फ़िक्र नहीं की जाती, आज इलेक्ट्रानिक मीडिया और प्रिन्ट मीडिया के ज़रिए आलमी माहौल को करप्ट करने की कोशिश हो रही है और इसका सबसे बड़ा निशाना मुसलमान हैं। दीन के दुश्मनों का निशाना यह है कि मुसलमानों को हर महाज़ से ऐसा करप्ट कर दिया जाए वह पूरी तरह खोखले होकर रह जाएं और उनमें किसी किसी भी महाज़ पर ज़ोर आज़माने की ताक़त भी बाक़ी न रहे। इस ख़तरनाक साज़िश से मुक़ाबले का बड़ा हथियार यह दावत है, इसकी बेदारी पैदा की जाए तो मुसलमानों को कोई भी लुक़्मा–ए–तर नहीं बना सकता है।

मुनकिरात के सैलाब पर भलाइयों का जो बांध बांधा गया था उसमें जगह–जगह सूराख़ कर दिए गए हैं। मुसलमानों का लक़ब "ख़ैर उम्मत" है, इनकी ज़िम्मेदारी है कि उन मनाफ़िज़ को बन्द करने की कोशिश करें, वरना इसका ख़तरा है कि कहीं पूरी इन्सानियत मुनकिरात के इस सैलाब की नज़र न हो जाए और फिर उसके बाद संभलना मुश्किल हो।

हिन्दुस्तानी मुसलमान आजकल आज़माइश के दौर से गुज़र रहे हैं और उनको अपनी क़ौमी ज़िन्दगी में चन्द दुश्वारियों और मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें सबसे पहला मसला वह मुश्किलें हैं जो नए हिन्दुस्तान में दावत व तब्लीग़ के काम में पेश आ गई हैं। इस हक़ीक़त से कौन नावाक़िफ़ होगा कि इस्लाम एक दावती व तब्लीग़ी मज़हब है। पूरी दुनिया में इस्लाम दावत व तब्लीग़ ही के ज़रिए फैला, हिन्दुस्तान भी मुख़्लिस मुबल्लिग़ों, दयानतदारों, ताजिरों, खुदा रसीदा बुजुर्गों और सूफ़िया–ए–किराम की तब्लीग़ की बरकत से जो लोग मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। उनकी तादाद उन मुसलमानों से कहीं ज़्यादा है, जो ख़ालिस इस्लामी मुल्कों से बराहेरास्त हिन्दुस्तान आए। इस्लाम की बेलौस तब्लीग़, हर ज़माने में मुसलमानाने हिन्द के लिए नई रूह और नया ख़ून फ़राहम करती रही है।

तब्लीग़े इस्लाम का यह सिलसिला मुसलमानों के आख़िरी दौरे हुकूमत तक और फिर अंग्रेज़ी हुकूमत के आख़िरी ज़माने तक कामयाबी के साथ जारी रहा। हर साल कसीर तादाद में ग़ैरमुस्लिम बरज़ा व रग़बत हल्क़ा–ए–बग़ोश इस्लाम होते रहे हैं। क्योंकि इस्लाम अपने हकीमाना उसूल तौहीदे ख़ालिस के अक़ीदे, अद्ल व इन्साफ़ पसंदी और मसावाते आम्मा में दूसरे तमाम मज़ाहिब से मुमताज़ था। तबक़ाती तफ़ाउत, छूत–छात और नजासत वग़ैरह जैसे अक़ाएद का इसके अन्दर कोई तसव्वुर न था। कुरआन मजीद सीरते रसूल (स0अ0व0) और इस्लाम की तालीमात दिलों को फ़तेह और दिमाग़ों को तस्ख़ीर कर रही थीं अगर हालात की रफ़्तार यही रहती तो बहुत मुमकिन था कि इस्लाम बर्रे सग़ीर हिन्द बल्कि पूरे बर्रे आज़म एशिया की अज़ीम तरीन मज़हबी ताक़त बन जाता लेकिन मुसलमानाने हिन्द और बिरादराने वतन के दरमियान सियासी मारका आराई शुरू हुई जो बाद को इस हद तक बढ़ी कि दोनों फ़िरक़ों के दिलों में एक–दूसरे के दिलों में नफ़रत व अदावत की आग भड़क उठी और शुकूक व शुब्हात की नाक़ाबिले उबूर दीवारें दरमियान में हाएल हो गईं, जिसके नतीजे में मुल्क की तक़सीम अमल में आई और दो आज़ाद हुकूमतें क़ायम हो गईं।

इस सियासी फ़िज़ा ने जो मख़सूस हालात की पैदाकरदा थी या जिसे हिन्दुस्तान ने बादले नाख़्वास्ता या बरज़ा व रग़बत अख़्तियार किया था। दोनों फ़िरक़ों के दिलों में एक–दूसरे के ख़िलाफ़ शक व शुब्हे की न मिटने वाली तल्ख़ी पैदा कर दी। हर फ़िरक़ा दूसरे फ़िरक़े की चीज़ों को नफ़रत व हिक़ारत की नज़र से देखता है, ख़्वाह इन चीज़ों का ताल्लुक़ फ़रीक़ मुख़ालिफ़ के मज़हब व अक़ीदे से हो या तहज़ीब व तमद्दुन और अफ़कार व ख़्यालात से हो। चुनान्चे यह जज़्बा–ए–नफ़रत हिन्दुस्तान में इस्लाम की दावत व तब्लीग़ की राह में सबसे बड़ी रूकावट बनकर सामने आया और इस्लाम के बारे में अब आम तसव्वुर यह हो गया है कि वह एक ऐसे मुल्क का सरकारी मज़हब है जो फ़रीक़े मुख़ालिफ़ की हैसियत रखता है या उस क़ौम का मज़हब है जिससे अर्से तक सियासी कशमकश, फिरक़ा वाराना जंगे, पार्लियमानी मुबाहिस होते रहे हैं, इनकी याद अब तक ज़हनों में ताज़ा है।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों की यह बहुत बड़ी दुश्वारी है लेकिन इसमें शक नहीं कि ज़माना जैसे–जैसे आगे बढ़ेगा, उसी क़द्र इस मुश्किल के हल के सामान फ़राहम होंगे, और इस्लाम नये सिरे से हर दिल अज़ीज़ और महबूबियत हासिल करेगा। शर्त यह है कि मुसलमान दावत व तब्लीग़ का काम हिकमते अमली, ख़ुलूस और बेग़र्ज़ी से करें। उनके सामने कोई सियासी मक़सद या इक़्तिदार की हवस और क़ौमी बरतरी का ख़्याल न हो। रुश्द व हिदायत, ख़िदमते ख़ल्क़, वाज़ व इरशाद और बनी नौ इन्सान के साथ हमदर्दी और शफ़क़त उन्हें दुनिया व आख़िरत की हलाकतखेज़ियों से निजात दिलाना उनके पेशेनज़र हो।

हिन्दी और दूसरी इलाक़ाई ज़बानों में सीरते नबवी और इस्लामी तालीमात पर मुश्तमिल दिलआवेज़ और फ़िक्रअंगेज़ लिट्रेचर नए उस्लूब निगारिश में हिन्दुस्तानी समाज के सामने पेश किया जाए। अपनी रूहानी व अख़लाक़ी सलाहियतों का सुबूत देना, इस मुल्क के साथ इख़्लास व मुहब्बत और उसकी तरक़्क़ी व ख़ुशहाली के लिए जद्दोजहद भी निहायत ज़रूरी चीज़ है।

(हिन्दुस्तानी मुसलमानः 181–185)

इन्सानी तआउन की अहमियत

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

हमारा पूरा मुआशरा, हमारी तहज़ीब व तमद्दुन, हमारा रिहाइशी व शहरी निज़ाम गरज़ जो कुछ भी है यह आपस मे बाहमी तआउन स`चल रहा है। और ऐसे तआउन स`चल रहा है कि बाज़ औक़ात बड़ी हैरत होती है। मसलन आप जो कुर्ता पहनते हैं, आप यह समझते हैं कि आपका कुर्ता है, आपने उसको हासिल किया है, इसमें आप पर किसी का कोई एहसान नहीं है, लेकिन अगर आप ग़ौर करें कि यह कुर्ता आपको कैसे मिला तो पता चलेगा कि यह कुर्ता कई मराहिल से गुज़र कर हम तक पहुंचा। वह इस तरह कि अगर इसका सूत न बनाया जाता और न काता जाता फिर उसके बाद उससे कपड़ा न बनाया जाता, फिर उसके बाद उस कपड़े को बाज़ार में न लाया जाता और फिर आप दर्जी से न सिलवाते तो क्या आपको यह कुर्ता मिलता? ज़ाहिर है कि अगर इसमें से आप कोई भी एक कड़ी निकाल दे`तो कुर्ता हासिल होना नामुमकिन होता। अगर बाज़ार से कपड़ा लाया नहीं जाता, या आप ख़ुद दर्जी नहीं है और कोई सिलने वाला भी नहीं है तो आपका यह कुर्ता बनना मुश्किल था, मालूम हुआ कि कई आदमी बीच में है, जिनके तआउन से आपका यह कुर्ता बना है तो इससे यह बात भी पता चल गई कि यह कुर्ता सिर्फ़ आपके चाह लेने से नहीं बना बल्कि इसके बनाने में कई लोग शरीक हुए और वह सब ग़ैर लोग हैं।

इसी तरह आप बतौर मिसाल पानी ले लें जो इन्सान की एक बुनियादी ज़रूरत है, जिससे इन्सान की बक़ा वाबस्ता है, इसके बारे में भी अगर आप ग़ौर करें तो मालूम होगा कि पानी भी आप तन्हा हासिल नहीं कर सकते थे। इसलिए कि अगर कुवां न बनाया गया होता या आज के ज़माने के एतबार से बोरिंग न हुई होती और पम्प न लगाया गया होता फिर वह पम्प कारख़ाने में बनाया न गया होता, तो आपके लिए पानी का एक बूंद भी हासिल करना मुश्किल था।

मज़कूरा मिसालों से यह समझना आसान होगा कि इन्सान बाहमी तआउन की बुनियाद पर सुकून की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि हम सिर्फ़ यही समझ लेते हैं कि यह चीज़ हमारी है और हमने हासिल की है। इसमें हम पर किसी का एहसान नहीं है। हालांकि अगर आप तआउन हटाकर देखें तो दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है तो तन्हा आपने हासिल कर ली हो। हमारी हर चीज़ दूसरों के तआउन और शिरकत से है। यह निज़ामे शिरकत है जिससे हमारी इन्सानी ज़िन्दगी चल रही है लेकिन हम बहुत बड़ी भूल में है और हम यह समझते हैं कि हम बज़ाते ख़ुद काफ़ी हैं, हम ही सबकुछ कर रहे हैं, जबकि हम तन्हा कुछ नहीं कर रहे हैं बल्कि हमारी यह ज़िन्दगी आपस की शिरकत व तआउन से चल रही है। ज़िन्दगी में आपसी शिरकत व तआउन की इस अहमियत के अंदाज़े के बाद सवाल यह क़ायम होता है कि जब हमारी ज़िन्दगी इस बात की मोहताज है कि हमको दूसरों का तआउन हासिल हो तो हम भी दूसरों के साथ हमदर्दी वाला तआउन क्यों नहीं करते हैं, एक शख़्स ने चाहे अपने काम की क़ीमत ली हो लेकिन इतना तय है कि हमारी ज़रूरत पूरी करने में उसका हाथ लगा और उसके बग़ैर हमारी वह ज़रूरत पूरी नहीं हो सकती थी। मगर इसके बावजूद भी हम उसके साथ हमदर्दी नहीं कर रहे हैं और उसको दूसरा समझ रहे हैं या उसको अपने ख़िलाफ़ समझ रहे हैं। ज़ाहिर है कि यह हमारी बहुत बड़ी ग़लती है। यह बहुत ही ताज्जुब की बात है कि हम एक शख़्स से पूरा फ़ायदा उठा रहे हैं जो हमारे इर्द–गिर्द हैं और हमारे तहज़ीब व तमद्दुन में लगे हुए हैं और अगर उनके साथ हमदर्दी का मसला आ जाए तो हम उनके साथ हमदर्दी न करें क्या इसलिए कि वह हमारे ग़ैर हैं? अगर वह ग़ैर हैं तो आपकी अक़्ली सतह के लिहाज़ से यह होना चाहिए कि आप उनसे कोई ताल्लुक़ ही न रखें, उनकी कोई चीज़ भी इस्तेमाल न कीजिए और उनसे कोई मदद भी न लीजिए।

दानिशमंदी का तक़ाज़ा यह है कि ऐसी ज़हनियत को ख़त्म किया जाए और इस हक़ीक़त को आम किया

जाए कि हमारा पूरा निज़ाम आपस में तआउन और हमदर्दी से चल र हा है। अगर ऐसा न हो तो हमारी ज़िन्दगी अजीरन हो जाएगी, मसलनः आप किसी ऐसी कपड़े की दुकान पर कपड़ा लेने गए कि आपकी मर्ज़ी का कपड़ा वहीं मिलता है और उस दुकानदार ने आपको ग़ैर समझा और आपको कपड़ा नहीं दिया तो आप क्या करेंगें, ज़ाहिर है आपके लिए ऐसी सूरत में दुश्वारी हो जाएगी, इसका मतलब यह हुआ कि अभी जब वह आपको ख़ुशी–ख़ुशी कपड़ा दे रहा है तो अगरचे वह अपने पैसे कमाने के लिए दे रहा है मगर उसके साथ वह अख़लाक़ से भी पेश आ रहा है, तब आपको आसानी से कपड़ा मिल रहा है और अगर वह आपका मुख़ालिफ़ होता तो वह साफ़ कह देता कि हम आपको कपड़ा नहीं देंगे, आप यहां से जाइये, तब आप कहां से ले सकते थे जबकि यह मालूम है कि वह कपड़ा उसी दुकान पर मिलता है और वह देने के लिए राज़ी नहीं है इसी तरह आप दुनिया की कोई चीज़ भी ले लें, नतीजा यही निकलेगा कि हमारा सारा निज़ाम एक–दूसरे के तआउन और हमदर्दी से चल रहा है। अगर हम मुख़ालिफ़त का मिज़ाज अख़्तियार कर लें तो ख़ुद हमारा ज़िन्दा रहना मुश्किल हो जाए।

ज़िन्दगी का एक अहम राज़ हमें समझना चाहिए कि जब हम एक दूसरे के साथ तआउन करते हैं तो हमें हमदर्दी वाला तआउन भी करना चाहिए। हमारी यह कोशिश होनी वाहिए कि दूसरे को नुक़सान न पहुंचे और दूसरा भी कामयाब हो, दूसरा भी सही इन्सान बने और दूसरे के जो इन्सानी हुक़ूक़ हैं वह अदा हों। यह इन्सानी हुक़ूक़ ही हैं कि हम एक–दूसरे के साथ तआउन करें और यह तआउन सिर्फ़ माद्दी न हो कि खाने–पीने की हद तक तआउन हो, बल्कि अख़लाक़ और मदद वाले तआउन की बड़ी अहमियत है। अफ़सोस की बात है कि इसमें हम लोगों के अन्दर बड़ी कमी आ गई है और ग़ौर किया जाए तो सिर्फ़ हमी में नहीं बल्कि सारी दुनिया में आज यही कमी नज़र आ रही है। यूं बज़ाहिर सब एक–दूसरे से तआउन ले रहे हैं लेकिन हमदर्दी वाला बहुत कम हो रहा है और लोगों में ख़ुदगर्ज़ी बहुत बढ़ गई है, इसीलिए हम यह महसूस करते हैं कि लगता है कि सारी दुनिया इस वक़्त ख़ुदगर्ज़ी पर चल रही है। आज हाल यह हो गया है कि हम दूसरे से फ़ायदा उठा रहे हैं लेकिन दूसरे को फ़ायदा पहुंचा नहीं रहे हैं जबकि इन्सानियत का तक़ाज़ा तो यह है कि अगर हम किसी से फ़ायदा उठाते हैं तो दूसरे को फ़ायदा पहुंचाए भी यानि तकलीफ़ के मौक़े पर हम उसके काम आएं और अगर उसको हमदर्दी की ज़रूरत है तो उसकी हमदर्दी करें, अगर उसकी कोई परेशानी है तो उसको दूर करें, अपनी हद तक जितनी हममें इस्तिताअत है, हम उसका तआउन करें। वाक़्या यह है कि अगर हमारा मुआशरा इन जज़्बात का हामिल हो जाए तो बहुत अच्छा और एक मिसाली मुआशरा होगा।

मौजूदा मुआशरा हमदर्दी वाला नहीं बल्कि ख़ुदगर्ज़ी वाला मुआशरा है, जिसमें हम एक तरफ़ चल रहे हैं, आप ग़ौर कीजिए तो हमारा पूरा निज़ाम ख़ुदगर्ज़ी पर ही चल रहा है। इस दौर में उस वक़्त तक कोई किसी की मदद नहीं करता जब तक कि उसका फ़ायदा उससे क़ायम न हो। आज दुनिया में यही निज़ाम चल रहा है। हर शख़्स अपने फ़ायदे को देखकर ही किसी का काम करता है। हर शख़्स सोचता है कि अगर हमें इससे फ़ायदा है तो हम इसका काम करेंगे वरना नहीं करेंगे। अगर किसी से फ़ायदा जुड़ा हुआ नहीं है तो लोगों की ज़हनियत यह बन चुकी है कि दूसरा मर रहा हो तो मरे, हमसे क्या मतलब। लेकिन उसके मरने से अगर हमको कोई नुक़सान होता है तो कोशिश यह होगी कि वह न मरे, दूसरी सूरत में यह है कि वह मरे, भाड़ में जाए, हमसे कोई मतलब नहीं है।

ग़ौर किया जाए तो हमारी यह तहज़ीब जो जानवरों की तहज़ीब है। जानवर यही करते हैं कि अगर एक जानवर खा रहा है और दूसरा जानवर आ गया तो वह उसको भगा देगा और उसे अपने चारे में शरीक नहीं होने देगा, क्योंकि उसको दूसरे जानवर से कोई ताल्लुक़ नहीं है और न ही जानवरों को एक–दूसरे के तआउन की ज़रूरत है। कोई जानवर किसी जानवर का तआउन नहीं करता इसलिए कि उनको ज़रूरत ही नहीं है। जब उनको खाने की ज़रूरत होती है तो वह पत्ते चर लेते हैं और जब पानी की ज़रूरत होती है तो तालाब से पानी पी लेते हैं गोया उनको आपसी तआउन की ज़रूरत ही नहीं है। अलबत्ता हम इन्सानों का हाल उससे अलग है, हम दूसरे के तआउन के बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकते लेकिन हमारा अलमिया यह है कि हम महज़ माद्दी तआउन पर चलते हैं और अख़लाक़ी व इन्सानी तआउन में हम बहुत कोताह हैं। आज दुनिया में जो दंगे हैं उनकी यही वजह है कि हर शख़्स ख़ुदगर्ज़ी में मुब्तिला है।

इख़्लास और रियाकारी

मौलाना सैय्यद जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

आज मैं आपको एक ऐसा वाक़्या सुनाना चाहता हूं जिससे आपको अंदाज़ा होगा कि इख़्लास की ताक़त और क़ूवत और रियाकारी के नतीजे में अमल के ज़ाया होने और कोशिश के नाकाम होने का, यह वाक़्या साबित करता है कि अमल चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, अगर वह अल्लाह के अलावा किसी दूसरे को खुश करने के लिए किया गया है तो अल्लाह तआला के नज़दीक उसकी कोई हैसियत नहीं, अल्लाह तआला न उसको क़ुबूल फ़रमाएगा, न उसकी तरफ़ देखेगा और न उसकी मीज़ान में उसका कोई वज़न होगा, पैसा चाहे जितना ही ज़्यादा क्यों न हो, अगर आदमी उसे शोहरत और तारीफ़ हासिल करने के लिए ख़र्च करे तो आख़िरत के एतबार से वह बेसूद है। उसकी कोई क़ीमत नहीं और न ही उससे आख़िरत में कोई फ़ायदा हासिल होगा, बल्कि वह नुक़सान उठाने वालों में से होगा, हज़रत अबू अमामा बाहली (रज़ि0) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः

"अल्लाह तआला उस वक़्त तक अमल क़ुबूल नहीं करता जब तक वह सिर्फ़ उसके लिए न हो और सिर्फ़ उसकी रज़ा न चाही जाए।" (सही–अल–जामेअ)

इख़्लास दीन की बुनियाद है, जिसे हम खो चुके हैं, हम काम इसलिए करते हैं ताकि हमारा तज़किरा हो और हमारी तारीफ़ की जाए, सिवाय उन चन्द ख़ुशक़िस्मत लोगों के जिनको अल्लाह ने ख़ुलूस–ए–नियत से और अज्र की उम्मीद में काम करने की तौफ़ीक़ दी है।

हज़रत तमीम दारी एक अज़ीम सहाबी हैं, एक शख़्स उनके पास आया और उनसे रात की नमाज़ के बारे में पूछा, उन्होंने गुस्से से उसकी तरफ़ देखा और फ़रमायाः "लोगों की नज़रों से बचकर एक रकआत नमाज़ पढ़ना यह मुझे ज़्यादा महबूब है, इससे कि मैं पूरी रात नमाज़ पढ़ूं और सुबह लोगों को बताऊं।"

हज़रत अली बिन हुसैन जिनको ज़ैनुल आबदीन और इमामुस्साजिदीन के नाम से जाना जाता है, उनकी आदत थी कि जब रात हो जाती और सन्नाटा हो जाता, लोग घरों में आराम करने चले जाते, रास्ता बिल्कुल सुनसान हो जाता तो वह बाहर निकलते, उनकी पीठ पर रोटी का एक थैला होता और उसे ख़ामोशी से रात के अंधेरे में ग़रीबों में बांट देते कि उन्हें अल्लाह के अलावा कोई नहीं देख सकता था वह फ़रमातेः

"ख़ामोशी से सदक़ा करना अल्लाह के ग़ज़ब को दूर कर देता है।"

जहां तक हमारा ताल्लुक़ है, हम सदक़ा देते हैं और चाहते हैं कि जो कुछ दिया है वह अख़बारों में लिखा जाए, इसकी ख़बर अख़बारों और मैग़्ज़ीनों में छापी जाए और हर जगह इसकी तश्हीर की जाए, जबकि हम यह क़ौल भूल जाते हैंः

"लोग हलाकत में हैं सिवाय उलमा के और उलमा हलाकत में हैं सिवाय उनके जो अमल करते हैं और अमल करने वाले हलाकत में हैं सिवाय इख़्लास रखने वालों के और इख़्लास रखने वाले भी बड़े ख़तरे में हैं।" क्योंकि शैतान का हमला सिर्फ़ उन्हीं पर होता है।

हम सदक़ा देते हैं लेकिन ख़ुदा के नज़दीक सबसे बेहतर और सबसे वज़नी सदक़ा क्या है, हम नहीं जानते, इसलिए ख़तरा है कि हम उस साये से महरूम न कर दिये जांए जो सदक़ा करने वालों को उस दिन हासिल होगा जिस दिन अल्लाह के अर्श के साये के अलावा कोई साया न होगा।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) का इरशाद हैः

"और वह शख़्स जो सदक़ा दे और उसको इस तरह पोशीदा रखे कि उसका दायां हाथ दे और बाएं हाथ को ख़बर तक न हो।"

अमीरुलमोमिनीन फ़िल हदीस सुफ़ियान सूरी (रह0) कहते हैंः

"एक मजलिस में मुझपर रिक़्क़त तारी हुई, मैं रो पड़ा और मुझे ख़्याल आया कि काश मेरे साथी भी होते तो वह भी मेरे साथ शरीक होते, फ़रमाते हैं कि मैंने उसी

रात ख़्वाब देखा कि एक शख़्स ने गुस्से में मुझसे कहाः अपनी उजरत उनसे ले लो जिनको तुम अपना रोना दिखाना चाहते थे।"

एक बादशाह ने मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और उसने यह भी हुक्म जारी किया कि मस्जिद की तामीर में किसी से एक पैसा भी न लिया जाए, उसने यह चाहा कि मस्जिद की तामीर पर उसका नाम लिखा जाए और उसकी तारीफ़ की जाए, उसने हुक्म दिया कि उसके नाम की तख़्ती मस्जिद के मरकज़ी दरवाज़े पर लगा दी जाए ताकि सबको मालूम हो कि यह मस्जिद तन्हा उसके ख़र्च पर बनाई गई है, एक रात उसने ख़्वाब देखा कि एक फ़रिश्ता और उसने तख़्ती से उसका नाम मिटा दिया और उसकी जगह एक औरत का नाम लिख दिया, बादशाह ने फ़ौरन आदमी को भेजा कि तहक़ीक़ करके आए, उसने आकर देखा तो तख़्ती पर बादशाह का नाम लिखा हुआ था तो उसने वापस आकर बादशाह को इत्तेला दे दी।

बादशाह ने कहाः यह बेकार के ख़्वाब हैं, अगली रात उसने फिर यही ख़्वाब देखा कि एक फ़रिश्ता आसमान से उतरता है, उसका नाम आसमान से मिटाता है और उसकी जगह उस औरत का नाम लिख देता है, जब सुबह हुई तो उसने हुक्म दिया कि उस औरत को तलाश किया जाए जिसका नाम उस तख़्ती पर लिखा गया है, चुनान्चे उसने मुल्क के कोने–कोने में अपने आदमी दौड़ाए यहां तक कि वह औरत एक झोंपड़ी में मिल गई, वह एक ग़रीब औरत थी, उसको लाया गया, बादशाह ने उससे कहाः तुम्हारा क्या मामला है और मस्जिद के साथ तुम्हारा क्या क़िस्सा है? क्योंकि मैंने मना किया था कि मेरे अलावा एक भी दिरहम कोई न दे, उस ग़रीब औरत ने कहाः ख़ुदा की क़सम मेरे पास एक दिरहम भी नहीं कि मैं अपने बच्चे को खिला सकूं तो मैं उस मस्जिद को कैसे अतिया करूंगी? बादशाह ने कहाः मेरा नाम मिटाकर तुम्हारा नाम क्यों लिखा गया? तुमने मस्जिद को क्या दिया? उसने कहाः मैं एक दिन मस्जिद के पास से गुज़री जबकि मस्जिद ज़ेरे तामीर थी तो मैंने हसरत से उसे देखा और ख़्वाहिश का इज़हार किया कि काश मेरे पास भी मस्जिद बनाने के लिए रक़म होती तो मैं उसके लिए ख़र्च करती, जब मैं यह सोच ही रही थी तो मेरी नज़र एक बंधे हुए खच्चर पर पड़ी, जो मस्जिद बनाने के लिए अपनी पीठ पर ईंटे लेकर आता था, पानी उससे दूर था और रस्सी से बंधे हुए होने की वजह से पानी तक पहुंचना मुश्किल हो रहा था, इसलिए मैंने आकर बर्तन अपने हाथ से खच्चर की तरफ़ कर दिया और उसने पानी पी लिया, मैंने सिर्फ़ यही एक काम किया, बस इसके अलावा मैंने कुछ नहीं किया और न ही एक दिरहम ख़र्च किया।

बादशाह ने कहा कि तुमने यह सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया और अल्लाह ने इसको क़ुबूल किया, जबकि मैंने सिर्फ़ इसलिए किया कि मेरा चर्चा हो, तारीफ़ हो, तो अल्लाह ने मेरा अमल क़ुबूल न किया फिर बादशाह ने हुक्म दिया कि उसका नाम मिटा दिया जाए और उस तख़्ती पर उस औरत का नाम दर्ज किया जाए।

तौहीद की करिश्मा साज़ियां

अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी (रह०)

"तौहीद इस्लाम की वह रूह है जिसने दीन के अलावा सियासत का काम भी अंजाम दिया और कम अज़ कम बारह सौ बरस तक उसने हर मैदान में इस्लाम के इल्म को बुलन्द रखा, इस्लाम का हर सिपाही तने तन्हा तलवार हाथ में लेकर निकलता था और चन्द रोज़ में नौमुस्लिमों की एक जमाअत अपने साथ लेकर दुनिया के किसी न किसी गोशे में अपनी सल्तनत खड़ी कर लेता था, अफ़्रीक़ा में बहरी जज़ीरों में और मुख़्तलिफ़ मुल्कों के दूर–दराज़ गोशों में इस तर्ज़े सियासत ने बड़ी–बड़ी रियासतें और हुकूमतें खड़ी कर दीं, इस तरह गुलामों को इस्लाम की आज़ादी से मालामाल करके उनको शमसीरज़नी, किश्वरकुशाई और तख़्तनशीनी का अहल बना देना, मिस्र में गुलामों की सल्तनत सदियों तक इसी तरह चलती रही है, स्पेन और मराकिश के फ़ातेह यही बरबरी नवमुस्लिम हैं जिन्होंने कई बार शुमाली अफ़्रीक़ा में हुकूमत की।"

तक़्वा क्या है?

सैय्यद बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

तक़्वा के मर्तबे व दर्जे:

तक़्वा के मुख़्तलिफ़ मर्तबे व दर्जे हैं, इसका पहला मरहला शिर्क से बचना है, जब तक आदमी शिर्क से नहीं बचता शिर्क के मज़ाहिर अख़्तियार करता है तो तक़्वा के मराहिल तय नहीं होते और उसको कुछ भी हासिल नहीं होता। अगर कोई मुश्रिक शख़्स गुनाहों और हर तरह के ग़लत कामों से बचता है और बहुत अच्छे–अच्छे काम करता है, तब भी उसकी यह तमाम चीज़ें अल्लाह तबारक व तआला के यहां बिल्कुल बेहक़ीक़त हैं, इसलिए कि बुनियाद ग़ायब है और जब बुनियाद नहीं है तो उसके ऊपर कोई चीज़ तामीर नहीं की जा सकती है, इसकी मिसाल रेत की है और रेत पर चाहे कितनी ही ऊंची इमारत बना दी जाए, उसको इस्तहकाम नहीं हो सकता और न ही रेत पर इमारत बनाना आसान काम है। इसलिए यह समझना ज़रूरी है कि तक़्वा के जो मर्तबे हैं, उनमें उसकी बुनियादी शक्ल को सबसे पहले अख़्तियार करना ज़रूरी है और वह शिर्क और आमाले शिर्क से बचना। तक़्वा का दूसरा मरहला मासियत और बड़े–बड़े गुनाहों से बचना है और तक़्वा का तीसरा मरहला मकरूहात से बचना है।

हम लोगों का एक अजीब व ग़रीब मिजाज़ यह बना है कि हमें बाज़ मर्तबा नवाफ़िल में लुत्फ़ आता है, लेकिन फ़राएज़ की तरफ़ तबियत माएल नहीं होती, बहुत से लोगों को देखा गया कि उनसे मस्जिद में आकर जमाअत से नमाज़ नहीं पढ़ी जाती, जबकि अपने घरों में वही लोग तहज्जुद गुज़ार होते हैं और बड़े–बड़े वज़ीफ़ों की पाबन्दी करते हैं। याद रहे कि यह ग़ैर शरई मिज़ाज है। अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) ने हमें जो एहकाम दिये उनमें सबसे पहले फ़र्ज़ से क़रीब होने की बात फ़रमाई है, इसलिए कि जब आदमी बुनियादों को मज़बूत कर लेता है तो उसके बाद हज़ारों मंज़िला इमारत तामीर कर सकता है, लेकिन अगर बुनियादें ही मज़बूत न हों तो आगे किसी चीज़ की कोई गारन्टी नहीं ली जा सकती।

तक़्वा का पहला मरहला:

तक़्वा के मराहिल में सबसे पहला मरहला शिर्क और आमाले शिर्क से बचना है जो सबसे ज़्यादा बुनियादी चीज़ है। अक़ीदा–ए–तौहीद का मसला सबसे अहम है और पूरा क़ुरआन मजीद इससे भरा हुआ है, जगह–जगह अल्लाह तआला ने यह बात साफ़ कर दी है कि जो अल्लाह के पैग़म्बर हैं वह सब अल्लाह के बन्दे हैं और अल्लाह के नबी (स0अ0व0) अल्लाह के आख़िरी नबी हैं, जो सबसे महबूब व अफ़ज़ल नबी हैं, मगर उनके बारे में भी फ़रमाया कि वह अल्लाह के बन्दे हैं।

आज हमारे मुसलमान और ईमान वालों में ऐसी कितनी चीज़ें पैदा हो रही हैं जिनके ताने–बाने शिर्क से मिलते हैं, मगर हम उन पर ग़ौर नहीं करते। किसी को हाजत रवा और किसी को मुश्किल कुशा समझना, किसी को मुतसर्रिफ़ समझना और किसी के बारे में यह ख़्याल करना कि जो अल्लाह की सिफ़ात हैं वह गोया कि उसको हासिल हो गई हैं, यह सारी चीज़ें शिर्क से ताल्लुक़ रखती हैं, बाज़ मर्तबा बहुत से दीनदार लोगों में भी यह मर्ज़ होता है और आदमी ज़बान से बड़ी आसानी के साथ बोल देता है कि हज़रत के तसर्रुफ़ से फ़लां काम बड़ी आसानी से हो गया। याद रहे कि अगर कोई यह समझता है कि हज़रत ने जो चाहा वह कर डाला और नऊज़ बिल्लाह वह "फ़अ्आलुल्लिमा युरीद" हो गए तो यह शिर्क की बात है। "फ़अ्आलुल्लिमा युरीद" की सिफ़ात अल्लाह की है, वह जो चाहे कर डाले, अगर कोई किसी बुज़ुर्ग को ऐसा समझता है तो यह शिर्क की बात है और आमाले शिर्क में दाख़िल है, कोई कुछ भी नहीं कर सकता जब तक अल्लाह तआला का हुक्म न हो। इसलिए अगर तक़्वे का मिज़ाज बनाना मक़सूद है तो पहले अपने तौहीद के अक़ीदे को मज़बूत करना चाहिए और शिर्क के हर तरह के शाएबों से और शिर्क के मामूली से मामूली शम्मा से भी नफ़रत होनी चाहिए।

तक़्वे का दूसरा मरहलाः

तक़्वे का दूसरा मरहला बड़े–बड़े गुनाहों से बचना है, लेकिन आदमी का मिज़ाज यह है कि वह आम तौर पर बड़े गुनाहों से नहीं बचता और मामूली चीज़ों के बारे में सोचता है। मशहूर है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) से कूफ़ियों ने आकर पूछा कि अगर मच्छर का ख़ून लग जाए तो नमाज़ हो जाएगी या नहीं? तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह के बन्दो! हज़रत हुसैन को क़त्ल करके आए हो और उनका ख़ून तुम्हारे मुंह पर लगा हुआ है और आकर पूछते हो कि अगर मच्छर का ख़ून लग जाए तो नमाज़ होगी कि नहीं? वाक़्या यह है कि कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जो कई बार आख़िरी दर्जे की होती हैं लेकिन उन पर तवज्जो नहीं होती, जबकि बहुत छोटी–छोटी बातों पर आदमी ग़ौर करता है, इसलिए हमारी तरतीब सही होनी चाहिए, हमें बुनियाद से ऊपर जाना है और ऊपर से नीचे नहीं आना है, अगर ऊपर से नीचे आएंगे तो सब ख़त्म हो जाएगा और ज़मीन पर आ जाएगा, टूट–फूट कर बराबर हो जाएगा और हमारी कोई चीज़ सलामत नहीं रहेगी, इसलिए हमें सबसे पहले अपनी बुनियादें मज़बूत करनी हैं और बुनियादें मज़बूत करने का सबसे पहला मरहला तौहीद के अक़ीदे की मज़बूती है और दूसरा मरहला बड़े–बड़े गुनाहों से बचना है।

तक़्वे का तीसरा मरहलाः

तक़्वे का तीसरा मरहला यह है कि आदमी छोटे गुनाहों व शुब्हे वाली चीज़ों से भी बचे, यानि जिन चीज़ों पर उसको शुब्हा होता हो उनसे बचे, हदीस में आता है कि हज़रत हसन (रज़ि0) से रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः "जो चीज़ तुम्हें शक में डालती है, उसको छोड़कर वह चीज़ अख़्तियार करो जिसमें तुम्हें कोई शक नहीं, बिलाशुब्हा सच्चाई तमानीनह है और झूठ शक व शुब्हा है।" (तिरमिज़ीः 2708)

सच्चाई से इन्सान को दिल का इत्मिनान और सुकून हासिल होता है, जब आदमी सच बोलता है तो उसे अन्दर से सुकून व इत्मिनान की कैफ़ियत हासिल होती है, जो झूठ से हासिल नहीं हो सकती और जब आदमी झूठ बोलता है तो तरद्दुद व पशोपेश में रहता है और शक व शुब्हे का शिकार रहता है। वाक़्या यह है कि आदमी जब तक़्वे का मिज़ाज बनाता है तो फिर उसके अन्दर अल्लाह तबारक व तआला यह कैफ़ियत पैदा फ़रमा देता है। इसीलिए तक़्वा के उन मराहिल का ख़्याल रखना ज़रूरी हैः यानि शिर्क और मरासिमे शिर्क से बचना, बड़े–बड़े गुनाहों से बचना और फिर सग़ाएर से बचना।

तक़्वे का मुस्बत पहलूः

तक़्वे में सिर्फ़ इसका मनफ़ी पहलू ही नहीं है कि यह यह चीज़ें नहीं करनी हैं, बल्कि यह ऐसी सिफ़ात हैं कि उनका जो मुस्बत पहलू है वह भी मतलूब है, मसलन यह भी तक़्वा की बात है कि आदमी तहज्जुद और नवाफ़िल पढ़े, या ज़िक्र व अज़कार का एहतिमाम करे, लेकिन तक़्वा के हुसूल की जो तरतीब है उसका ख़्याल रखना ज़रूरी है। यह बात दुरुस्त नहीं है कि आदमी वाजिबात और नवाफ़िल का एहतिमाम करे, लेकिन फ़राएज़ में ग़फ़लत बरते और फ़र्ज़ नमाज़ भी जमाअत से न पढ़े, ज़ाहिर है कि जमाअत छोड़ने वाले के लिए हदीस में बड़े सख़्त अल्फ़ाज़ आए हैं। इसीलिए फ़राएज़ के बाद नवाफ़िल का मरहला है, जब आदमी इस तरतीब के साथ चलेगा तो वह उन बुलन्दियों तक पहुंच जाएगा जो गोया तक़्वे की आख़िरी चोटियां हैं। सच्ची बात यह है कि अगर इन्सान को तक़्वे की बुलन्दी हासिल हो जाए तो अल्लाह तआला उसके दिल की कैफ़ियत को न जाने कहां से कहां तक पहुंचा देते हैं और उस बन्दे को अल्लाह तआला से ग़ैर मामूली ताल्लुक़ पैदा हो जाता है।

दिल का तक़्वाः

तक़्वा, दिल की कैफ़ियत और बहुत सी चीज़ों के करने और बहुत सी चीज़ों के न करने का नाम है, कुरआन मजीद के अन्दर इरशाद हैः

"अल्लाह को उनका गोश्त और ख़ून हरगिज़ नहीं पहुंचता, हां उसको तुम्हारे (दिल) का तक़्वा पहुंचता है।" (सूरह हजः 37)

इस आयत से पता चला कि तक़्वा सिर्फ़ कुछ चीज़ों से बचने का नाम नहीं है, बल्कि तक़्वा आमाल के साथ दिल की उस कैफ़ियत का नाम है जो मतलूब है, यानि जो अमल किया जाए, अल्लाह की रज़ा के लिए किया जाए और पूरे इस्तहज़ार के साथ किया जाए, अल्लाह का जितना ज़्यादा ध्यान पैदा होगा और उसी की मुहब्बत में आदमी जितना ज़्यादा काम करेगा, उसके नतीजे में आदमी के अमल के अन्दर ताक़त व जान पैदा होगी।

मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुहिम का पसेमंज़र

जनाब आरिफ़ अज़ीज़

जब से देश मे नये शासन ने काम करना आरम्भ किया है, तब से मुसलमानों को साम्प्रदायिक शक्तियों की ओर से भिन्न–भिन्न प्रकार की सलाहें दी जा रही हैं। कभी उनसे कहा जाता है कि वे अपने सोचने के तरीक़े को बदलें। वे पहले भारतीय हैं, फिर मुसलमान। उनके पूर्वज हिन्दु थे, जिसकी जानकारी के लिए मुसलमानों का डी एन ए कराया जाना चाहिए, इत्यादि। मुसलमानों को इस प्रकार की राय देने के कई उद्देश्य हैं। एक ये भी है कि मुसलमान अपने देश के प्रति वफ़ादार बनें यानि आज उनकी वफ़ादारी भरोसे के लायक़ नहीं। इस बात के पीछे जो सोच काम कर रही है वह बहुसंख्यक को देश की मुख़्तार आला समझने और अल्पसंख्यकों विशेषतयः मुसलमानों दूसरे दर्जे का नागरिक समझने का एहसास है। इस आधार पर कभी मुसलमानों से अपना "सिविल कोड" बदल कर "कॉमन सिविल कोड" अपनाने की मांग होती है। कभी उनकी ज़ाति पहचान पर उंगली उठायी जाती है तो कभी उन पर देश के प्रति वफ़ादार रहने का ज़ोर डाला जाता है।

ऐसे लोग प्रथम तो इस वास्तविकता से परिचित नहीं या अपने बहुसंख्यक होने के घमन्ड में जानबूझ कर ऐसी सच्चाई को भूल जाते हैं कि इस्लाम वह इकलौता धर्म है जो किसी भी प्रकार के भौगोलिक बंटवारे का क़ायल नहीं रहा इसके लिए केवल आस्ता का मसला ही अन्तिम व स्थायी है। भौगोलीय सीमाएं उनको बदल नहीं सकती। जहां तक रहन–सहन पर क्षेत्रीय प्रभाव का प्रश्न है तो उनको भारतीय मुसलमानों में भी आसानी से देखा और समझा जा सकता है। विभिन्न देशों में मुसलमानों के सांस्कृतिक श्रेष्ठताओं या मसलिकी भिन्नताओं को कुछ दूसरे क्षेत्रों के इस्लाम की संज्ञा देना और उस आधार पर बदलाव की बात करना अगर शरारत नहीं तो नासमझी ज़रूर कही जाएगी।

इस प्रकार की सोच रखने वाले लोग यह भी भूल जाते हैं कि देश के साथ वफ़ादारी, आत्मिक संबंध, सांस्कृतिक विशेषताएं और संबंध व रिश्तेदारियां ये सब अलग–अलग नवैय्यत की मज़हरें जिनको आपस में मिलाया नहीं जा सकता है। देश का कोई भी अल्पसंख्यक अपने धर्म पर रहते हुए भारतीय हो सकता है। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बर्मा और जापान के बौद्ध, बौद्ध भी हैं, और बर्मी व जापानी भी। या नेपाल के हिन्दु, हिन्दु भी हैं और नेपाली भी। ऐसा तो नहीं कि हिन्दुस्तान के बाहर जितने भी बौद्ध या हिन्दु रहते हैं उन सबकी पहली वफ़ादारी हिन्दुस्तान के साथ हो और उसके बाद की वफ़ादारी उन देशों से जहां वे रहते हैं। यदि श्रीलंका, बर्मा, जापान के बौद्ध सारनाथ, गया और सांची के साथ और भारत के सिक्ख पाकिस्तान में स्थित ननकाना साहब और पंज साहब से आत्मीय संबंध रखते हुए भी अपने देश के वफ़ादार नागरिक बन सकते हैं तो भारतीय मुसलमान की वफ़ादारी पर केवल इसलिए शक करना कि वे काबे की ओर मुंह करके नमाज़ अदा करते हैं या हज करने हिजाज़ जाते हैं या भारतीय राष्ट्रवाद का एक हिस्सा होने के साथ वे एक अन्तर्राष्ट्रीय आत्मीय कुन्बे के भी सदस्य हैं, क्या ये शरारत नहीं है?

अस्ल में, सामूहिक जीवन के राजनीतिक व व्यक्तिगत दो पहलू होते हैं और देश एक शुद्ध राजनीतिक संस्था है, व्यक्तिगत नहीं। जब ये आधारभूत सत्यता भुला दी जाती है तो बहुसंख्यक देश के सर्वाधिकार को अपने नाम सुरक्षित करा लेते हैं। और देश व शासन की एजेंसियों को कम संख्यां वाले गिरोहों पर अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं थोपने के लिए प्रयोग करने लगती हैं। बहुमत व अल्पमत के बीच भ्रान्ति, नफ़रत व विरोधाभास का आरम्भ यहीं से होता है भारत में सामप्रदायिक तनाव के हामी तत्व आज

इसी ग़लतफ़हमी में पड़े हैं और यही कारण है कि उनको उन मुसलमानों की वफ़ादारी में शक नज़र आता है जो बहुसंख्यकों की व्यक्तिगत पहचान को अपनाने के समर्थन में नही हैं। जब ये सोच आम हो जाती है तो अल्पसंख्यकों का हर जातिगत प्रदर्शन राष्ट्रवाद के मुतवाज़िन इश्तराक के बजाए असहनीय ज़्यादती नज़र आने लगती है और आगे चलकर यही देश में फूट का कारण बनता है।

भारत में आज से नहीं कोई साठ–सत्तर साल से इन्हीं विचारों का प्रचार हो रहा है और बहुसंख्यकों की कुछ कट्टरवादी संस्थाएं यही बात ज़ोर देकर कह रही हैं कि राजनीतिक जीवन में धार्मिक, सांस्कृतिक साम्प्रदायवाद की कोई गुंजाइश नहीं और कोई भी साम्प्रदाय वादी राजनीतिक व्यवस्था उन्हें बर्दाश्त नहीं जैसे मुसलमान अगर देश व क़ौम के वफ़ादार बनना चाहते हैं तो उन्हें पहले अपनी जातिगत पहचान या दूसरे शब्दों में कहें तो सामूहिकता को समाप्त करना पड़ेगा। हालांकि जातिगत पहचान हो या सामूहिकता ये कुछ लोगों की आवश्यकता की पूर्ति का काम करते हैं और उन्हें अनदेखा करके इस देश का भला नहीं किया जा सकता।

वास्तव में संघ परिवार की सोच ये है कि भारत में केवल एक जाति आबाद है और वह "हिन्दु जाति" है। लोगों की इबादत के तरीक़े अलग–अलग हो सकते हैं किन्तु आधारभूत रूप से वे सब हिन्दु सभ्यता से बंधे हुए हैं अतः यहां का हर नागरिक हिन्दु है। जो स्वयं को हिन्दु कहने या समझने से परहेज़ करे, वह देश से निकल जाए उसके लिए भारत में कोई जगह नहीं होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति या वर्ग स्वयं को हिन्दुस्तानी कहता है तो उसका भी कोई महत्व नहीं उसे ख़ुद को हिन्दु ही कहना और समझना पड़ेगा।

हिन्दु कहलवाने पर साम्प्रदायिक ताक़तो की यह ज़िद इसलिए है कि ताकि कुछ अर्से बाद ज़हनी तौर पर मुसलमान और दूसरे अल्पसंख्यक ये भूल जाएं कि वास्तव में वे कौन हैं और किस धर्म से संबंध रखते हैं? जब उनके बच्चे अपने माता–पिता से यह सुनकर होश संभालेंगे कि हम हिन्दु हैं तो आगे चलकर नई पौध स्वयं को हिन्दु मानने लगेगी। पहले वे रस्म व रिवाज और सभ्यता व संस्कृति के तौर पर हिन्दुत्व के रंग में रंगेगी। फिर समय के साथ–साथ अपने धर्म से एवं अपनी आस्था से बरगश्ता हो जाएगी। इसीलिए संघ परिवार भारत में "हिन्दुत्व" की बुलन्दी पर ज़ोर देता रहा है और धर्मनिरपेक्षता से देश के जुड़ाव को समाप्त कर देना चाहता है।

ये और बात है कि भारत जैसे विशाल देश में जहां विभिन्न धर्मों, भाषाओं, सभ्यताओं के मानने वाले आबाद हैं उनको बहुसंख्यकों के रंग में नहीं रंगा जा सकता है और इस प्रकार के सभी प्रयासों के परिणाम देश को तबाह करने वाले साबित होंगे लेकिन इसकी चिन्ता कट्टरवादी विचार धारा के समर्थक हिन्दुत्व के ध्वजवाहकों को नहीं। उनके दिल व दिमाग़ में तो बस अल्पसंख्यकों को अपने अन्दर समाहित कर लेने का भाव ठाठे मार रहा है, हालांकि ये देश को स्थिरता नहीं प्रदान कर सकता है। इसके लिए खुला हुआ दिल, अपनाइयत एवं भाइचारे की आवश्यकता पेश आएगी और साम्प्रदायिक ताक़तों के यहां इसकी गुंजाइश नहीं।

इन्सानियत की सबसे बड़ी ख़िदमत

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

"आज इन्सानियत की सबसे बड़ी ख़िदमत यह है कि उन जाबिर व ज़ालिम निज़ामों के ख़ुदसाख़्ता असनाम को मुनहदिम व मिस्मार किया जाए जो इन्सानियत की तबाही व बर्बादी, हलाकत व ख़ूंरेज़ी, फ़ित्ना व फ़सादात के सिवा कुछ नहीं देते और यह निज़ाम शमसीर व सिना की नोक से नहीं मिटेगा और न ही इसे मैदाने जंग में शिकस्त दी जा सकती है, इसकी शहे रग सिर्फ़ आबदार व हुर्रियत पसंद, तन्क़ीदनिगार क़लम और मज़बूत व पाएदार फ़िक्र से ही काटी जा सकती है, जो उनके मक्र व फ़रेब और खोखलेपन को पूरी तरह दुनिया के सामने वाशगाफ़ कर दे।"

(नया आलमी निज़ाम और हमः 78)

तौहीद वेदों में

मौलाना मुसव्विर आलम नदवी

वेदों में अल्लाह के एक ही होने पर साफ़ बयान है। एक ख़ुदा की बहुत सारी विशेषतांए बयान करने के बाद वेद कहता हैः "वो एक अकेली ताक़त है, वो बेमिसाल है, बस एक, हर जगह रहने वाला, देव एक ही है।" (अथर्ववेद) वेदों में है किः "जो एक और इकलौता मालिक है, वो दाता होने की वजह से इनसानों को धन दौलत से नवाज़ता है, वो बिना किसी साझी और साथी के सब दुनिया का मालिक है।" (ऋगवेद) ऋगवेद में दूसरी जगह आता है किः "एक ईश्वर शारीरिक व आत्मिक ताक़ते अता करने वाला है, उसी की इबादत सभी देवता करते हैं, उस एक ईश्वर की ख़ुशी हमेशा की ज़िन्दगी अता करने वाली और मौत का ख़ात्मा कर देने वाली है, इस ईश्वर को छोड़कर तुम किस देवता की पूजा कर रहे हो।" (ऋगवेद) यजुर्वेद में आत है किः "विचारों से परे एक एवं अतुलनीय सृष्टा अज़ल से एक ही है।" (यजुर्वेद) इसी वेद में दूसरी जगह आता है किः "जो आदमी माद्दो से से बनी हुई वो अज्ञानता के घटाटोप अंधेरों में प्रवेश करता है।" (ऋगवेद) दूसरी जगह हैः "उस ख़ुदा की कोई फ़ोटो या मूर्ति नही है।" (यजुर्वेद) "जिसकी व्याख्या कलामों के द्वारा नहीं की जा सकती है बल्कि जिसकी ताक़त से कलाम पैदा होता है, तुम उसी को ख़ुदा जानों, न कलामों की व्याख्या किये गये ख़ुदा को, जिनकी लोग पूजा करते हैं।" (कीन उपनिषद) दूसरी जगह लिखा है कि, "जिसको कोई आंख से नहीं देख सकता, बल्कि जिससे आंखो को देखने की ताक़त मिलती है, तुम उसी को ख़ुदा मानो, न कि उसको कि जिसको आंखे देखती हैं और लोग उसकी पूजा करते हैं।" (कीन उपनिषद) "ख़ुदा वो है जिसके ख़ौफ़ से आग और सूरज में तपिश पैदा होती है और मौत के देवता अपने अपने काम करते हैं।" (खण्ड उपनिषद) "ख़ुदा वो है जिसके खौफ़ से हवा चलती है और उसी के डर से सूरज निकलता है, उसी के डर से आग में तपिश पैदा होती है और उसी के डर से मौत के देवता अपने काम पर लगे हुए हैं।" (शिवातेश्वर उपनिषद) "वो कौन है जिसकी ताक़त से जिस्म व जान, कान, आंख और सभी अंग काम करते हैं और वो कौन है जो मन का मन, जान की जान, कलाम का कलाम, कान का कान और आंख की आंख है? वो वही एक है जिसको जानकर अक़्लमन्द लोग हमेशा हमेशा के लिये इस दुनिया से नजात पाते हैं।" (कीन उपनिषद) "यक़ीनन ख़ुदा की रोशन ज़ात कामिल व अकमल हाथ पैर वग़ैरह सभी इन्सानी अंगो से दूर, इस दुनिया में भी और इसके अलावा भी, जन्म इत्यादि से परे, इन्सानों जैसे जिस्म व जान व मन से भी दूर होने के कारण हर प्रकार से बेऐब व पाक है। इसलिये इन्सान की न मरने वाली आत्मा से इसकी समानता नहीं की जा सकती है, वो ख़ुदा तो इससे बहुत महान है।" (मन्डक उपनिशद) इन्सान की पैदाइश के बारे में यजुर्वेद में सवाल व जवाब है कि "किसने तुमको पैदा किया हैं? एक ख़ुदा ने तुमको पैदा किया। उसने तुमको क्यों पैदा किया? उसने तुमको अपने आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने के लिये पैदा किया।" (यजुर्वेद)

दीनी इस्तिक़ामत और ईमान की अहमियत

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम जिसके अलावा कोई माबूद नहीं, तुममें से जब कोई शख़्स जन्नत वाला काम करता है, यहां तक कि उसके और जन्नत के दरमियान एक बालिश्त का फ़ासला रह जाता है तो उसकी तक़दीर सामने आ जाती है और वह जहन्नम वालों का काम करने लगता है और उसकी वजह से वह जहन्नम में डाल दिया जाता है, और उसी तरह तुममें से कोई शख़्स जहन्नमियों का सा अमल करता है, यहां तक कि वह जहन्नम के बिल्कुल क़रीब पहुंच जाता है तो उसकी तक़दीर सामने आ जाती है और वह जन्नत वाला अमल करने लगता है और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाता है। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

इन्सान चाहे जितने अच्छे आमाल करे फिर भी उसको अपने ऊपर भरोसा नहीं करना चाहिए। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों पर ख़ूब तन्क़ीद करते हैं कि फ़लां झूठ बोलता है, फ़लां चोरी करता है, फ़लां कुफ़्रिया अमल कर रहा है और अपने बारे में उनको यह ख़्याल ही नहीं आता कि अभी हमारी ज़िन्दगी है, ख़ुदा न करे कि कोई ऐसा कुफ़्रिया काम हो जाए जिसकी बुनियाद पर जहन्नम में फेंक दिया जाए। किसी के ताल्लुक़ से फ़ैसला करने में जल्दी करना और फिर उसके लिए कोई भी ऐसा फैसला करना जिसका वह मुस्तहिक़ नहीं है तो अपने लिए नुक़सान की बात है, क्योंकि हम ज़ाहिरी आमाल को देखकर फ़ैसला करते हैं, अल्लाह तआला राज़ों का जानने वाला है। उससे कोई चीज़ छिपी हुई नहीं। वह मुस्तक़बिल भी ऐसे ही जानता है जैसे माज़ी और हाल। हर इन्सान को पहले अपनी फ़िक्र करनी चाहिए, आज दूसरों की फ़िक्र करने का रिवाज बहुत बढ़ गया है। दूसरों की फ़िक्र करना अच्छी बात है लेकिन अपनी फ़िक्र के साथ, ऐसा न हो कि हम चोरी करें और दूसरों को चोरी से रोंके, हम सूद खाएं और दूसरों के सामने सूद की मनाही को बयान करें, इसीलिए हमारी ज़बान में वह तासीर नहीं जो सहाबा–ए–किराम की ज़बानों में थी। हज़रत सहल बिन साद (रज़ि0) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया है कि अमल का दारोमदार ख़ात्मे पर है, जैसा ख़ात्मा वैसा अंजाम, कोई भी इन्सान अपनी इबादतों, अपनी मेहनतों और अपने ज़िक्र व अज़कार या अपने किसी भी ख़ैर के काम पर ग़ुरूर न करे, क्योंकि किसी को नहीं मालूम की मौत कब आएगी, हमारे सलफ़ में इसका बहुत एहतिमाम था, हर शख़्स डरता था कि कहीं मौत आने से पहले ईमान न चला जाए। हमारे असलाफ़ हर वक़्त इस्तिक़ामत की दुआ मांगते थे, क्योंकि इस्तिक़ामत ही अस्ल चीज़ है। हाफ़िज़ इब्ने रजब हम्बली अपनी मशहूर किताब जामेउल उलूम वल हुक्म में तहरीर करते हैं:

"अस्ल इस्तिक़ामत दिल की इस्तिक़ामत है, अगर दिल अल्लाह की वहदानियत व समदानियत पर जम गया और पूरे तरीक़े से इसके अन्दर यह बात बैठ गई तो बाक़ी आज़ा व ज़वारेह भी अपना काम सही तरीक़े से करेंगे, इसलिए कि दिल अस्ल है और दिल की हैसियत बादशाह की है।"

इसी की तरफ़ रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इशारा किया है हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इरशाद फ़रमाया:

"सुन लो! जिस्म में एक गोश्त को लोथड़ा है, अगर वह सही तो पूरा जिस्म सही, और अगर वह ख़राब तो पूरा जिस्म ख़राब और वह दिल है।"

अस्ल बुनियाद दिल है और दिल की इस्लाह ज़रूरी है। हमारे अकाबिर इस्लाहे क़ल्ब के लिए औलिया अल्लाह के पास जाते थे। हम सबको अपने ईमान की फ़िक्र करनी चाहिए और यह समझना चाहिए कि ईमान कोई जागीर नहीं कि मिल गया, बस अब उसकी फ़िक्र करो या न करो, वह तो मिला ही रहेगा। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) बराबर इसकी दुआ करते थे। हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया: नेक अमल करने में जल्दी करो, उन फ़ित्नों से पहले–पहले जो तारीक रात के हिस्से की तरह होंगे। सुबह को आदमी मोमिन होगा शाम को काफ़िर, शाम को मोमिन होगा सुबह को काफ़िर। दुनिया के चन्द टुकड़ों की ख़ातिर वह अपना दीन बेचेगा।"

कुल मुसलमान - मुकम्मल इस्लाम

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

अल्लाह तआला ने हमको ईमान की दौलत अता फ़रमायी है। इस्लाम से नवाज़ा है। हमको भी ये चाहिये कि इस्लाम वाले, ईमान वाले बन जायें और अपने इस्लाम और ईमान को आगे बढ़ाने की कोशिश करें क्योंकि जो चीज़ आगे नहीं बढ़ती वो घटती है। ये क़ायदा है। दुनिया में कोई चीज़ एक सी नहीं रहती या बढ़ेगी या घटेगी। सब जानते हैं कि अगर पैसा रखे रहें, कहीं भी बैंक वग़ैरह में रखें तो उसकी वैल्यू कम हो जाती है ये क़ायदा है। ऐसे ही उन चीज़ों का मामला है कि छोड़ने पर कमी आती चली जायेगी और गर्द आ जायेगी। रोज़ झाड़ना पड़ता है। और इसी तरह हर इन्सान को अपने को ठीक करने के लिये रोज़ नहाना पड़ता है, रोज़ दांत मांजने पड़ते हैं, आंख धोनी पड़ती है और पैर धोने पड़ते हैं और बाल बनाने पड़ते हैं। अगर कोई इस चीज़ को छोड़ दे तो सोचो कुछ दिनों में क्या हो जायेगा? ऐसे ही अगर कोई हममें से अपने ईमान की फ़िक्र न करे, अपने अक़ीदे की फ़िक्र न करे, अपनी इबादतों की फ़िक्र न करे, अपने मामलों की फ़िक्र न करे, अपने संबंधों की फ़िक्र न करे तो उन सभी चीज़ों पर वही गर्द जम जाती है और इस तरह जम जाती है कि वो हाल होता है जो हमारे वतन के भाइयों का है कि शिक्र में डूबें हुए हैं जो दुनिया की सबसे नापाक, ख़तरनाक, घिनौनी चीज़ है जिसका लग़्व निकालने ही से बदन में झुनझुनी आ जाये। इसीलिये जो पाक जगहें होती है उनको शिर्कवालों से बचाया जाता है। इसीलिये कुरआन शरीफ़ में कहा गया है: (हरम पाक है, पाक है तो नजिस वहां नहीं जा सकते) (तौबा : 28)

बातिन की जांच करते रहे

सबसे बड़ी नापाकी और गन्दगी, वो अक़ीदा की ख़राबी है और मुसलमानों में आजकल ये दस किलो दूध में दो सौ ग्राम पेशाब के क़तरे की जैसे आ चुका है। इसीलिये ये क़तरा ख़तरे की घन्टी है बिल्कुल ख़ालिस होना चाहिये अकीदा, मामले भी। क्योंकि वहां तो सालिड माल चाहिये, मिलावट वाला नहीं और ये रहेगा उसी वक़्त जब हम चेक करें, जैसे हर वक़्त हम अपने आप को चेक करते हैं। नौजवानों को देखिये हालांकि आप स0अ0 ने ज़्यादा करने से मना फ़रमाया है कि मुबालग़ा किसी चीज़ में नहीं होना चाहिये लेकिन अन्दर की जो चीज़ेंह उनकी फ़िक्र हमको क्यों नहीं है ताकि इस एतबार से हम अच्छे लगे। अन्दर तो बाहर से ज़्यादा बनाना चाहिये कि इसी लिये कहा गया है (कि बार बार थोड़ा थोड़ा अपने आपको ठीक करते रहो) क्योंकि एकदम से कोई बदल जाये ये मुश्किल है। इसी का नाम इस्लाह है।

इस्लाह ज़रुरी है

हर शख़्स को इस्लाह करनी चाहिये और जो है उसको ठीक करते रहना चाहिये ताकि वो चमकती रहे, दमकती रहे, महकती रहे, चहकती रहे, दूसरे भी महसूस करें तो जिस तरह कोई अपने को न संवारे तो भूत की सूरत हो जाती है लड़के भी उससे भागते हैं। ऐसे ही जो सीरत की चिन्ता नहीं करता उसके पास से भी लोग भागने लगते हैं। घमन्ड में पड़ जाते हैं। दूसरों को कमतर समझने वाला हो जायेगा, उसी की ज़मीन हड़पन वाला बन जायेगा। किसी की दुकान पर क़ब्ज़ा करने वाला बन जाये। रिश्वतर खोर बन जाये। सूद खोर बन जाये। दूसरों के अधिकारों को हड़पने वाला बन जाये और इस तरह की जितनी सामाजिक समस्यांए हैं उनमें बहुत ही गन्दा हो जाये तो लोग उससे भागने लगते हैं। तो ऐसे में हमसब की ज़िम्मेदारी है कि हमस ब चीज़ों को ख़ालिस करते चले जायें।

रिया और हसद से दूर रहो

आज कल दो बातें हो गयी है एक तो जलन जो पुराना मर्ज़ है और मिलावट रिया की है। अब अगर ये नहीं है तो नमाज़ हमारी कैसी ही हो अल्लाह कुबूल कर लेंगे लेकिन आजकल रिया के साथि लोगों ने उसको योगा भी बना दिया है। ये भी समस्या है कि नमाज़ तो

पढ़ रहे हैं लेकिन अल्लाह के सामने सर झुकाने कितने आ रहे हैं? बल्कि आना तो इस तरह से चाहिये था कि मस्जिद में क़दम रखते ही कहते : (कि रहमत के दरवाज़े अल्लाह खोल दीजिये) अगर बन्द होंगे तो ज़ाहिर है कि वसवसे आयेंगे। लेकिन नियत ही न हो तो क्या ये सब इलाज है जो अल्लाह के रसूल स0अ0 ने बताया है। इसी तरह हसद है इसके बहुतसे इलाज बयान करते हैं। अकाबिर व सूफ़िया इत्यादि की कैसे दूर होगा? हदीस में आप स0अ0 ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें ऐसी है जो हर शख़्स में होती है, हसद, ज़न, तीरह यानि शगुन लेना। तो जब इलाज पूछा, अब देखिये इलाजे नबवी अल्लाहु अकबर! आप ने फ़रमाया, "अगर हसद हो तो उस पर ज़ुल्म न करो, उसके ख़िलाफ़ तुमहरी तरफ़ से कोई कार्यवाही न होनी चाहिये न ज़बानी, न अमली, अब ग़ौर करे कि हसद गन्दगी है और बदज़बानी भी गन्दगी है और हर ज़मीन की एक खाद होती है और इन्सान भी मिट्टी का बना हुआ है और उसके अन्दरदिल इत्यादि सब मिट्टी का होता हैर और वो हसद बदगुमानी और शगुन लेना ये दिल की खाद है। और खाद ऊपर नहीं रखी जाती वरना बदबू फैलेगी। और अगर अन्दर गयी तो फूल खिलाएगी। अब देखिये अल्लाह के रसूल स0अ0 ने किस क़दर ग़ैर मामूली इलाज बताया दिल पर गुज़र तो जाएगी जब अप कुछ कहेंगे ही नहीं लेकिन ये चीज़ हमारे लिये ख़ैर व बरकत की वजह बन जायेगी।

इबादात भी ख़ालिस कीजिये

ऐसे ही हमारे मामले भी ख़ालिस होना चाहिये और उसमें इबादतामें कोई और चीज़ शामिल न हो और अगर ज़्यादा आजकल कोई दुनियावी का नफ़ा भी मिल जाये और उसके अलावा और आप देखिये कि निकाह में रस्म व रिवाज की मिलावट न हो और बेजा रिया की मिलावट न हो तो निकाह बहुत उम्दा हो गा और बरकत वाला बन जायेगा और इबादत बन जायेगा। क

कुल मुसलमान मुकम्मल इस्लाम चाहिये

टब इसी तरह से कहा गया है कि तुमको मौत न आये मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो चुके हो और मुस्लिम कैसेः (कि इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ) और सल्म्मि का शब्द असाधारण है मतलब है कि अल्लाह से ऐसा मामला कर लो कि ज़र्रा बराबर भी तुम्हारे अन्दर अल्लाह के हुक्म ख़िलाफ़ अल्लाह की तालीम के ख़िलाफ़ कितना भी तरद्दुद नहीं आना चाहिये यानि सुलह हो जायेगी। जो हुक्म हो उसी को बजा लाना है और सारे मुसलमानों से कहा जा रहा है कि न इस्लाम आधा न मुसलमान आधा लेकिन आजकल दोनों चीज़ें आधी अधूरी। हालांकि दोनों तरफ़ से सौ फ़ीसद होनाचाहिये।

अब दाख़िल कैसे हो? वो धीरे–धीरे होना पड़ेगा। जैसे आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ और आगे बढ़ा यहां तक कि मेम्बर पर पहुंच गया। मालूम हुआ इस तरह धीरे–धीरे बढ़ता गया कि कामिल इस्लाम में दाख़िल हो गया।

औलाद के अक़ीदे की फ़िक्र कीजिये

हज़रत याकूब अलै0 के क़िस्से से भी मालूम हुआ कि जो जितना नबी के क़रीब होगा उतनी ही उसको अक़ीदे की फ़िक्र होगी। तो ऐसे ही हममें से हर शख़्स को औलाद की फ़िक्र होनी चाहिये कि क्या पढ़ रहा है? और कहां पढ़ रहा है? आज पूरे हिन्दुस्तान का जायज़ा लें मालूम होगा कि किस तरह लोग अपने बच्चों का अक़ीदा दांव पर लगाये हुए हैं। बड़े–बड़े पैसे वाले भी अपने बेटों को जहन्नम में डालने को तैयार हैं।

परेशानियों का हल ख़ालिस दीन में है

अब लोग आते हैं परेशानी बताते हैं। हालांकि ज़कात निकालते नहीं। तो यही सब समस्यांए हैं। जिसकी वजह से दुनिया परेशान है। तो अगर हम लोग सही दीन पर अमल करने वाले बन जाये तो हमारी परेशानियं खुदब खुद दूर हो जायेंगी। सारे हालात ठीक हो जायेगे। क्योंकि नालाएकियों की वजह से हमारे ये सब हो रहा है। और ज़ाहिर है कि गाड़ी के पुर्ज़े हटेंगे तो वो गिर पड़ेगी वही हाल हमारा है। और इसीलिये कहते हैं कि तावीज़ दे सब हल हो जाये। न नमाज़, न रोज़ा, न सब कुछ, बस जुगाड़ से काम चल जाये। ये नहीं बल्कि पहले पूरी मशीन ठीक करो, उसके बाद ज़रूरत हो तो कर सकते हैं। तो ठीक कहां से हो सकता है? ज़रूरत इस बात की है कि हम बग़ैर मिलावट वाला दीन अल्लाह के दरबार में पेश करें। अल्लाह तआला हम सबको सही समझ भी अता फ़रमाये और कामिल इस्लाम की दौलत भी अता फ़रमाये।

इस्लामी में सफ़ाई सुथराई

अल्लाह तआला ने सफ़ाई सुथराई को मनुष्य की प्रकृति में रखा है। इसीलिये साधारणतयः स्वयं की इच्छानुसार लोग सफ़ाई–सुथराई का ध्यान रखते हैं। माताएं अपने बच्चों को नहलाती–धुलाती हैं ये भी पाकी व साफ़ करने की एक व्यवस्था है। कपड़ों औ बिस्तरों को धोया जाता है, यहां तक कि स्वयं को धोया जाता है सब पवित्रता के ही दृश्य हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने इन्सान के अन्दर अपने को ठीक रखने और साफ़ रखने का तत्व रखा है। चूंकि इस्लाम सम्पूर्ण व मुकम्मल दीन है और अल्लाह तआला ने उसको सम्पूर्ण रूप से शेष रखा है, इसलिये उसने पवित्रता पर अत्यधिक ज़ोर दिया है, जितना दुनिया के किसी दूसरे धर्म में नहीं पाया जाता है। लेकिन इस्लाम ने पवित्रता का वर्गीकरण भी किया है। नम्बर एक पर आरम्भिक स्तर की चीज़ स्वच्छता है उसका भी इस्लाम ने पूरा ध्यान रखा है, और स्वच्छता में वे सारी चीज़ें हैं जिसको घरों की सफ़ाई, आंगन की सफ़ाई, कमरों की सफ़ाई की संज्ञा देते हैं, इसी प्रकार मस्जिदें मैली हो जाती हैं, उनको झाड़ा जाता है, उन पर रंग कराया जाता है, ये सारी चीज़ें स्वच्छता से संबंध रखती हैं। और इसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी स्वच्छता का प्रयोग कराया गया जिसको प्रकृति की संज्ञा दी गयी है कि नाख़ून काटे जाएं, दाढ़ी, मूंछे, बाल और आंखों को भी सही रखा जाए और तेल का भी इस्तेमाल किया जाए, इसके अतिरिक्त शरीर को धोया जाए इत्यादि–इत्यादि। ये सारी चीज़ें आरम्भिक वर्ग में सम्मिलित हैं, जिनको हर आदमी अपने–अपने अन्दाज़ से करता है और जो व्यक्ति ऐसा नही करता तो उसको उसके घर वाले व समाज वाले बुरा समझते हैं। इसीलिये इसको मनुष्य के स्वभाव में भी सम्मिलित किया जाएगा। ये बाह्य सफ़ाई है, जो कि इस्लाम का आरम्भिक आदेश है।

इस्लाम में जब भी सफ़ाई का शब्द बोला जाता है तो उसका क्षेत्र व्यक्तिगत सफ़ाई से समाज की सफ़ाई तक फैला हुआ नज़र आता है। सुबह का आरम्भ नमाज़ से और नमाज़ से भी पहले वुज़ू को आवश्यक घोषित कर दिया गया है। जिसमें हाथ–पैर और चेहरे से पहले मिस्वाक की नसीहत की जाती है ताकि मुंह की पूरी तरह सफ़ाई और साफ़–सुथरे मुंह के साथ अपने रब की पवित्रता बयान की जाए। इसी तरह रात को आख़िरी नमाज़ रखी गयी है ताकि सोने से पहले भी पूरी तरह सफ़ाई सुथराई का ध्यान रखा जाए। इसी प्रकार नमाज़ जैसी महत्वपूर्ण इबादत के लिये शर्त है कि वा हर प्रकार की नकारात्मक सोच से पाक हो। साल भर में ज़कात की व्यवस्था की गयी है और रोज़े के द्वारा मनुष्य के शरीर एवं आत्मा की अन्तरमन में पैदा होने वाली गन्दगी को साफ़ करने का आदेश दिया गया है। इसके समाज की हर उस चीज़ से घृणा पैदा करायी गयी जिससे समाज का वातावरण दूषित हो। रास्ते में मलमूत्र त्यागने से मना किया गया बल्कि कहा गया कि अपनी इस आवश्यकता के लिये आबादी से जितनी दूर संभव हो जाया करो। खाने व पहनने की वस्तुओं को खुला न रखा जाए, यहां तक कि खाने–पीने की वस्तुओं में फूंका भी न जाए, घरों में रोशनदान बनाए जाएं, और अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाए जाएं, रास्ते से हर प्रकार की हानिकारक वस्तुओं को हटाया जाए। इत्यादि

एक नेक समाज का वजूद उस समय तक संभव नही जब तक कि उसके लोग खुली हुई छिपी हुई दोनों प्रकार की सफ़ाइयों से लैस न हों। घर के साथ मुहल्ले की गलियां भी साफ़ हों, और बाहर से आने वाले को देखकर ये अनुभूति हो कि ये मुसलमानों के मुहल्ले हैं। यहां के घर व आंगन और यहां की गलियां इस बात की गवाह है कि यहां के लोग उस धर्म के मानने वाले हैं जिसने हर प्रकार की सफ़ाई–सुथराई व पवित्रता पर ध्यान दिया है। और जब इस धर्म के मानने वाले मानव समाज में क़दम रखें और लोगों से बातें व मुलाक़ाते हों तो उनके विचार व कर्म और उनकी बातें गवाही दें कि ये उस नबी का नाम लेने वाले हैं जिसने हर क़दम पर सफ़ाई का आदेश दिया है। यहां तक कि नमाज़ जैसी पवित्र इबादत से पहले भी मिस्वाक और वुज़ू के द्वारा स्वयं को पाक करने की हिदायत दी। ताकि पांच बार के इस काम के बाद किसी तरह के बाहिरी और अन्दरूनी गन्दगी की संभावना न रहे।

इसलिये आवश्यक है कि सफ़ाई सुथराई के क्रम में इस्लाम की शिक्षाओं का अपक्षपात पूर्ण निरीक्षण किया जाए और उसका मौलिक कर्तव्य मुसलमानों का है कि जब वे अपने जीवनों में इन आदेशों को लागू करेंगे तो दूसरे स्वयं उन वास्तविकता ओं को समझेंगे और इस्लामी शिक्षाओं से जो दूरी अपनायी जा रही है वह दूर होगी और मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के बीच जो खाई स्थापित होती जा रही है वह खत्म हो सकेगी।

मौलाना अली मियां नदवी (रह0)

बहैसियत नाज़िम नदवतुल उलमा

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

"मौलाना अली मियां नदवी की फ़िक्र व बसीरत, जुहद व अमल और सोज़ व गुज़ार के असरात से मालूम होता है कि उन्होंने नदवे को हयाते नौ बख़्श दी।" (मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मदज़िल्लहुल आली)

हज़रत मौलाना अली मियां नदवी (रह0) फ़राग़ते इल्मी के बाद 1933ई0 में दारुल उलूम नदवतुल उलमा की मसनदे दर्स पर जलवा अफ़रोज़ हुए, नदवा में उनकी दस साला मुद्दते तदरीस बिला शुब्हा इफ़ादियत व नाफ़ेईयत से भरपूर थी और नदवे के ज़िम्मेदारों को उनके हुस्ने कारकरदगी का बख़ूबी एतराफ़ था, इसीलिए उन्हें 1948ई0 में मजलिसे इन्तज़ामी का रुक्न मुन्तख़ब किया गया नीज़ 1949ई0 में सैय्यदुत्ताएफ़ा अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0) के इसरार पर नदवे का नायब मोतमदे तालीम बनाया गया और सैय्यद साहब की वफ़ात के बाद 1954ई0 में मोतमदे तालीम की हैसियत से उनका इन्तिख़ाब अमल में आया, फिर नदवे के इन्तिज़ामी उमूर में अपने बड़े भाई मौलाना डॉक्टर अब्दुल हयि हसनी नदवी (रह0) की मुआवनत के लिए ग़ालिबन 1958ई0 में नदवे के नायब नाज़िम भी मुन्तख़ब हुए और डॉक्टर साहब की वफ़ात के बाद तमाम अराकीन की इत्तेफ़ाक़े राय से 1961ई0 में मौलाना अली मियां नदवी (रह0) ने नदवे के उहदा–ए–निज़ामत को वक़ार बख़्शा और तादमे हयात (1999ई0) वह इस मन्सब पर फ़ाएज़ रहे।

मौलाना अली मियां नदवी (रह0) ने अपनी हमा जहत ख़िदमात से नदवे की तारीख़ का एक नया बाब रक़म किया, उनकी ख़िदमात इल्मी, इन्तिज़ामी, तामीरी, तालीमी, दावती और इस्लाही तमाम पहलुओं पर मुहीत हैं, उन्होंने नदवे में मुख़्तलिफ़ हैसियतों से तक़रीबन 65 साल बेलौस ख़िदमत की और अपनी उलुल अज़मी, मन्सूबाबन्दी और मुख़्लिसाना और इन्तिज़ामी सलाहियतों की बुनियाद पर पूरी दुनिया में नदवतुल उलमा को एक ख़ास वक़ार व एतबार हासिल कराया।

हज़रत मौलाना (रह0) जब नदवे के नायब नाज़िम मुन्तख़ब हुए तब नदवे में तलबा और तामीरात का औसत ज्यादा न था और न ही उसकी शोहरत बामे उरूज को पहुंची थी, नीज़ तक़सीमे हिन्द के अलमनाक वाक़्ये के सबब नदवे की माली हालत भी बहुत कमज़ोर हो गयी थी, इसलिए कि मुसलमानों की कूव्वते इमदाद व अआनत और उनके वसाएल व ज़राए आमदनी बहुत महदूद हो गए थे।

हज़रत मौलाना (रह0) ने अपना फ़र्ज़े मन्सबी निभाते हुए नदवे की ख़ातिर मुल्क व बैरूने मुल्क के बहुत से सफ़र किये, जिनमें नदवे का भरपूर और जामेअ तआरुफ़ कराया और उसके लिए माली तआउन की राहें हमवार कीं, लेकिन इस सिलसिले में उनकी शाने बेनियाज़ी को ज़रा भी दाग़ न लगा, बल्कि बाज़ औक़ात उनके यह असफ़ार नदवे के हक़ में कम और उन लोगों के लिए ज़्यादा मुफ़ीद साबित हुए जिनको शर्फ़े मेज़बानी हासिल हुआ, हज़रत मौलाना (रह0) अपने सफ़रे बर्मा की रूदाद क़लमबन्द करते हुए रक़म तराज़ हैं:

"नदवतुल उलमा का माली फ़ायदा तो कम हुआ, लेकिन बर्मा का दीनी फ़ायदा अल्लाह के फ़ज़्ल से ज़रूर हुआ।" (कारवान–ए–ज़िन्दगीः 1/459)

हज़रत मौलाना (रह0) की उन समरआवर कोशिशों का नतीजा यह हुआ कि नदवे में तलबा व तामीरात की तादाद में गिरांक़द्र इज़ाफ़ा हुआ और धीरे–धीरे हिन्दुस्तान के तूल व अर्ज़ में नदवे के निज़ाम के मुताबिक़ इदारे क़ायम हुए।

1961ई0 में हज़रत मौलाना (रह0) नदवे के नाज़िम मुन्तख़ब हुए तो आपकी तमामतर इल्मी व दीनी ख़िदमात का मरकज़े अमल भी नदवा ही लाज़िम क़रार पाया, जो बिलाशुब्हा नदवे के वसीअ तआरुफ़ का एक मुअस्सिर ज़रिया साबित हुआ, यहां तक कि पूरे आलमे इस्लामी में नदवे का तआरुफ़ इस्लामी तहज़ीब का गहवारा और इस्लाह व तरबियत का बेहतरीन मरकज़ के तौर पर हुआ।

अन्फ़ासे अली ने रोशन फिर नदवे का जहां में नाम किया ।।

हज़रत मौलाना (रह0) ने अपने दौरे निज़ामत में इब्तिदा से इन्तिहा तक सत्तर साल पर मुहीत एक जामेअ निज़ामे तालीम मुरत्तब किया और आलिया व फ़ज़ीलत को दो बड़े शोबों में तक़सीम कर दिया, एक उलूमे दीनिया का शोबा बनाया जिसके ज़ेल में तफ़सीर व उलूमे तफ़सीर, हदीस व उलूमे हदीस और फ़िक़्ह व उसूले फ़िक़्ह के शोबे क़ायम किये, दूसरा ज़बान व अदब का शोबा बनाया जिसके ज़ेल में अदब और नक़्द व बलाग़त के शोबों को रखा, इसके बाद उलूमे दीनिया के शोबे से मुताल्लिक़ तलबा के लिए दारुल उलूम ही में क़ज़ा व इफ़्ता और दावा व फ़िक्रे इस्लामी के अहम शोबे भी बनाए

और आलिमियत से फ़राग़त के बाद तलबा को अख़्तियार दिया कि वह अपने मिज़ाज व मज़ाक़ के लिहाज़ से मुनासिब शोबे में दाख़िला लें।

हज़रत मौलाना (रह0) ने अपने दौरे निज़ामत में दारुल उलूम के तालीमी व तामीरी मक़ासिद की तकमील व तहसील के लिए ऐसे नुमायां काम किये जिनकी वजह से आलमी सतह पर फ़िक्रे नदवा के आला तख़य्युल का तआरुफ़ हुआ और उसे तरक़्क़ी व इस्तिहकाम के बेहतर मवाक़ेअ नसीब हुए। फ़िक्रे नदवा का एक अहम उन्सुर असरी तक़ाज़ों से हमआहंग निज़ामे तालीम है, जो क़दीम रिवायतों और जदीद तक़ाज़ों का जामेअ हुआ, इसी के पेशेनज़र हज़रत मौलाना (रह0) ने नदवा में एक मुतवाज़न निज़ामे तालीम का कामयाब तजुर्बा किया और असरी दानिशगाहों से फ़ारिग़ीन के लिए पांच साला ख़ुसूसी दरजात का निज़ाम भी क़ायम किया।

यह भी फ़िक्रे नदवा के बुलन्दतरीन मक़ासिद में शामिल है कि तालिब इल्म दर्सी किताबों पर उबूर के साथ मआसिर ज़बानों और बिलख़ुसूस अरबी व उर्दू ज़बान में तहरीर व तक़रीर की भरपूर सलाहियत रखता हो और उम्मत के हर तबक़े को मुख़ातिब करने का अहल हो, इसी के पेशेनज़र हज़रत मौलाना (रह0) ने "अन्नादी–अल–अरबी" और "जमीयत–अल–इस्लाह" की बज़्मों को रौनक़ बख़्शी और उनके तहत मुख़्तलिफ़ अन्जुमनें सजाईं जिनसे एक आलम फ़ैज़याब हुआ।

इदारों के तआरुफ़ और उनकी तर्जुमानी में एक बड़ा हिस्सा शोबा–ए–सहाफ़त व नश्रियात का भी होता है, हज़रत मौलाना (रह0) ने इस सिलसिले में भी अहम इन्क़िलाबी इक़दामात किये और नदवे के शोबा–ए–सहाफ़त की गूंज पूरे आलम में सुनी गई, चुनान्चे आपकी सरपरस्ती में अरबी ज़बान में "अर्राएद" और "अलबासुल इस्लामी" जैसे शोहर–ए–आफ़ाक़ आरगन निकले और उर्दू ज़बान में "तामीरे हयात" का इजरा हुआ, हिन्दी ज़बान में "सच्चा राही" और अंग्रेज़ी में "दि फ्रेगरेंस ऑफ़ ईस्ट" जैसे मशहूर रिसाले व जराएद ने नदवे की दिलआवेज़ तस्वीर पेश करने में पूरा हिस्सा लिया।

"तारीख़ नदवतुल उलमा" की तरतीब व तदवीन का ज़र्रीं काम भी हज़रत मौलाना (रह0) ही के दौरे निज़ामत का हिस्सा है, जिससे न सिर्फ़ यह कि नदवे के इल्मी व दीनी कारनामों को समझा जा सकता है, बल्कि उससे यह भी पता चलता है कि हिन्दुस्तानी मुसलमान की दीनी, इल्मी, रूहानी, अख़लाक़ी व सियासी और तालीमी ज़िन्दगी में तहरीके नदवा का असासी किरदार क्या रहा है?!

दावत व फ़िक्रे इस्लामी और तहक़ीक़ व तस्नीफ़ के तक़ाज़ों की तकमील के लिए नीज़ जदीद ज़हनों को मोतदिल और इस्लामी लिट्रेचर की फ़राहमी के लिए हज़रत मौलाना (रह0) ने नदवा ही के अहाते में "मजलिसे तहक़ीक़ात व नश्रियाते इस्लाम" की बुनियाद भी डाली जिससे कई सौ छोटे–बड़े वसीअ रसाएल तबअ हुए और पूरे आलम ने उनसे इस्तिफ़ादा किया।

अस्रे हाज़िर में जदीद फ़िक़्ही मसाएल और एहकामे शरीयह की तहक़ीक़ व तअय्युन के लिए "मजलिसे तहक़ीक़ाते शरीयह" का क़याम भी आप ही का रहीने मिन्नत है।

मुस्लिम समाज में दीनी बेदारी व इस्लाहे रुसूम के लिए जद्दोजहद भी नदवे के बुनियादी मक़ासिद में शामिल है, जिसके लिए "शोबा–ए–दावत व इरशाद" और "शोबा–ए–इस्लाहे मुआशरा" के तहत बाज़ाब्ता व मुनज़्ज़म तरीक़े पर मेहनतें की जाती हैं, इसी तरह नदवे के माली व तामीरी उमूर की निगरानी के लिए "शोबा–ए–तामीर व तरक़्क़ी" भी उसका एक अहम शोबा है और उन तमाम शोबों की तजदीद और उनकी तरक़्क़ी व इस्तिहकाम में हज़रत मौलाना (रह0) की मेहनतों को तारीख़े नदवा में कभी भी फ़रामोश नहीं किया जा सकता।

नदवतुल उलमा की फ़िक्र से हमआहंग मुल्क व बैरूने मुल्क में जब दीनी मदारिस की तादाद में इज़ाफ़ा हुआ, जिनका फ़िक्री व तालीमी इल्हाक़ नदवा से था, तो उनकी मुस्तक़िल निगरानी के लिए "शोबा–ए–मदारिस मुलहिक़ा" का क़याम भी हज़रत मौलाना (रह0) ही के ज़माने में हुआ। इसी तरह शहर लखनऊ में मकातिब का मुस्तक़िल निज़ाम जारी रखने और उसके इन्तिज़ामी उमूर की निगरानी के लिए "शोबा–ए–मकातिब शहर" के नाम से मुस्तक़िल शोबा क़ायम किया गया।

किसी भी इदारे का कुतुबख़ाना उसकी इल्मी गहराई का अमीन होता है, 1961ई0 में क़ब्ल नदवा का मरकज़ी कुतुबख़ाना दारुल उलूम की दर्सगाह के एक हाल में था, हज़रत मौलाना (रह0) ही के दौरे निज़ामत में इसके लिए एक मुस्तक़िल पांच मंज़िला पुर शिकोह इमारत "अल्लामा शिबली नोमानी लाइब्रेरी" के नाम से तामीर हुई और अहद ब अहद इसकी तरक़्क़ी होती रही, फिर तलबा की रोज़ अफ़रोज़ तादाद में इज़ाफ़े के सबब हर शोबा और हर रवाक़ की एक मुस्तक़िल लाइब्रेरी का क़याम भी आपके दौरे निज़ामत से शुरू हुआ।

तामीरात के बाब में शिबली लाइब्रेरी के अलावा बहुत से दफ़्तर, मअहदुल कुरआन, क़दीम हास्टलों में तौसीअ और जदीद हास्टलों की तामीर और तलबा की बेहतरीन सेहत के लिए एक जिमख़ाने का क़याम भी हज़रत मौलाना (रह0) ही के दौरे निज़ामत की एक सुनहरी कड़ी है।

राब्ता–ए–अदब–ए–इस्लामी का क़याम भी हज़रत मौलाना (रह0) ही के फ़िक्र व तख़य्युल पर मुबनी है, मौलाना तादमे हयात इसके सदर रहे और इसका मरकज़ी दफ़्तर नदवतुल उलमा ही में है, इसीलिए इस प्लेटफ़ार्म के तहत होने वाली काविशें भी नदवे की तरक़्क़ी के लिए संगे मील साबित हुईं।

वाक़्या यह है कि नदवतुल उलमा ने हज़रत मौलाना (रह0) के अहदे निज़ामत में ऐसी हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी की कि उसने बहुत जल्द एक ऐसे जामिया की शक्ल अख़्तियार कर ली, जिसको अवामी, दीनी व अस्री तबक़ों में यकसां तौर पर क़ुबूल हासिल हो गया, हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल आली ने नदवतुल उलमा की इस जामेईयत को इन जामेअ अल्फ़ाज़ में ज़िक्र किया है:

"नदवतुल उलमा पूरे आलमे इस्लाम बल्कि पूरी दुनिया के दानिशवर तबक़े में जाना–पहचाना इदारा बन चुका है, जो अपने तालीमी मदारिज के एतबार से यूनिवर्सिटी के मेयारे तालीम के मुताबिक़ है और निसाब के एतबार से किसी भी बड़ी दीनी दर्सगाह की ख़ुसूसियत का हामिल है और मज़ामीने निसाब के एतबार से क़दीम व जदीद के सालेह और ज़रूरी मज़ामीन को जमा किये हुए है और इसके काम और नाम को बहुत वक़ीअ समझा जाने लगा है।" (अहदसाज़ शख़्सियतः 242)

नदवे की तारीख़ और हज़रत मौलाना (रह0) के दौरे निज़ामत को जो चीज़ औजे कमाल तक पहुंचाती है, जिसके बाद नदवा एक आलमी दानिशगाह और पूरे आलमे इस्लामी की तवज्जेहात का मरकज़ बन गया और उसके ज़रिये वसीअ पैमाने पर तहरीके नदवा का कमाहक़ा तआरुफ़ हुआ, वह नदवतुल उलमा का पचास साला जश्ने तालीमी है, जिसमें हज़रत मौलाना (रह0) की दावत पर बयक वक़्त आलमे इस्लाम के वसीअ क़लमरो से हर रंग व बू के फूल एक स्टेज पर इकट्ठा हो गए थे, इस तारीख़साज़ इजलास में हज़रत मौलाना (रह0) ने नदवे के मस्लक, उसकी तारीख़ और उसकी फ़िक्र व मक़ासिद से दुनिया की तमाम क़द्दावर शख़्सियात को रोशनास कराया, जिसका असर यह हुआ कि बक़ौल मौलाना बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल आलीः

"यह इजलास दारुल उलूम की तारीख़ में एक ऐसा नुक़्ता–ए–आग़ाज़ साबित हुआ कि जिसके नतीजे में आलमी सतह पर और वसीअ पैमाने पर दारुल उलूम और उसकी तहरीके नदवतुल उलमा का तआरुफ़ हुआ और मुकम्मल सतह पर भी उन हल्क़ों से जो अब तक उसके पैग़ाम व सदा से नाआशना थे, ग़लतफ़हमियां दूर हुईं और अवामी सतह पर इसका अच्छा तआरुफ़ हुआ।" (सवानेह मुफ़क्किर–ए–इस्लामः 331)

तलबा व असातिज़ा की फ़िक्र व नज़र में वुसअत पैदा करने के लिए तौसीई ख़ुत्बात की रिवायत भी हज़रत मौलाना (रह0) की जारी करदा है, जिसके लिए आप मस्जिदे अक़्सा, हरमैन शरीफ़ैन के अइम्मा और ख़ासकर के आलमे इस्लामी की मुमताज़ तरीन शख़्सियात को मौक़े–मौक़े पर नदवे में दावत देते रहते थे, ताकि आलमी सतह पर नदवे का इल्मी क़द नुमायां नज़र आए।

हज़रत मौलाना (रह0) के दौरे निज़ामत में नदवे के अहाते में बेशुमार इज्तिमों और कान्फ्रेंसों का इन्अिक़ाद भी अमल में आया, लेकिन चार अहम बैनुल अक़्वामी कान्फ्रेंसें ऐसी मुन्अक़िद हुईं जो दूर दराज़ के इलाक़ों तक अहले इल्म व दीन के हल्क़ों में लाएक़े तहसीन क़रार पाईं, पहली कान्फ्रेंस दीनी तालीम के मौज़ू पर और दूसरी अदबे इस्लामी के मौज़ू पर हुई, तीसरी कान्फ्रेंस भी अदबे इस्लामी के मौज़ू पर मुन्अक़िद हुई जिसमें राब्ते का क़याम अमल में आया और चौथी रद्दे क़ादियानियत के मौज़ू पर हुई।

हज़रत मौलाना (रह0) के नज़दीक दर्सगाह का तसव्वुर तरबियतगाह का था जिस के अन्दर मख़्सूस मक़ासिद के साथ नस्ले नौ की ज़हनी व फ़िक्री तश्कील की जाती है। इसलिए आपने निज़ामे तालीम की ज़ाहिरी इस्लाह के साथ तलबा में सही दीनी फ़िक्र व शऊर को भी परवान चढ़ाया, उनका दावती मिज़ाज बनाया और ख़्वाबीदा जज़्बात व सलाहियतों को बेदार किया, जिसका नतीजा यह हुआ कि नदवे में इल्मी, तहक़ीक़ी और अदबी माहौल के साथ वहां की फ़िज़ा में रूहानियत, ख़ुदा तरसी और ख़ौफ़े ख़ुदा से लबरेज़ जज़्बा भी नज़र आने लगा।

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल आली के अल्फ़ाज़ सच हैं:

"मौलाना कुछ कम चालीस साल नदवे के नाज़िमे आला रहे, यह पूरा अर्सा नदवे की तरक़्क़ी, तालीमी मेयार की बुलन्दी और वक़अत व वक़ार में इज़ाफ़े का ज़माना है।" (अबक़री शख़्सियतः 162)

मुसलमानों का खून बहाना जाएज़ नहीं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि0) कहते हैं रसूलुल्लाह (स0अ) ने फ़रमाया जो मुसलमान इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और मैं अल्लाह तआला का रसूल हूं तो उसका खून बहाना जाएज़ नहीं है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत उमर (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ) ने फ़रमाया कि जब तक कोई मुसलमान बेजा क़त्ल नहीं करता उस वक़्त तक वो दीन में रहता है यानि अल्लाह तआला की रहमत का उम्मदीदवार होता है। (बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला सबसे पहले लोगों को जिन मामलों में हुक्म सुनाएगा वो खून (क़त्ल) के मामले होंगे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के निकट दुनिया की समाप्ति आसान है मुसलमान आदमी के क़त्ल से। (तिरमिज़ी, नसाई)

हज़रत अबू सईद (रज़ि0) और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया है कि अगर आसमान वाले और ज़मीन वाले दोनों किसी मुसलमान के क़त्ल में शामिल हों तो अल्लाह तआला उन सबको दोज़ख़ की आग में उल्टा डालेगा। (अबू दाऊद)

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इरशाद फ़रमाया कि जो बेतौफ़ीक़ मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान बन्दे की किसी ऐसे मौक़े पर मदद नहीं करेगा जिसमें उसकी इज़्ज़त पर हमला हो और उसकी आबरू उतारी जाती हो तो अल्लाह तआला उसको भी ऐसी जगह अपनी मदद से महरूम रखेगा जहां वो अल्लाह की मदद का इच्छुक होगा। और जो (बातौफ़ीक़ मुसलमान) किसी मुसलमान बन्दे की ऐसे मौक़े पर मदद और सहयोग करेगा जहां उसकी इज़्ज़त व आबरू पर हमला हो तो अल्लाह तआला ऐसे मौक़े पर उसकी मदद फ़रमाएगा जहां वो उसकी मदद का तलबगार होगा। (सुनन अबू दाऊद)

हज़रत मआज़ बिन अनस अन्सारी (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि जिसने किसी बद्दीन मुनाफ़िक़ के शर से किसी मुसलमान बन्दे की मदद की (जैसे किसी दुष्ट बद्दीन ने किसी मोमिन बन्दे पर कोई इल्ज़ाम लगाया और किसी बातौफ़ीक़ मुसलमान ने उसकी मदद की) तो अल्लाह तआला क़यामत में एक फ़रिश्ता नियुक्त करेगा जो उसके गोश्त (यानि जिस्म) को जहन्नम की आग से बचाएगा और जिस किसी ने किसी मुसलमान बन्दे को बदनाम करने और गिराने का कि उस पर कोई इल्ज़ाम लगाया तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम के पुल पर क़ैद कर देगा। उस समय तक के लिये कि वो अपने इल्ज़ाम की गन्दगी से पाक साफ़ हो जाए।

मतलब ये है कि किसी मोमिन बन्दे को बदनाम व रुसवा करने के लिये उस पर इल्ज़ाम लगाना और उसके ख़िलाफ़ प्रोपगन्डा करना ऐसा संगीन और इतना सख़्त गुनाह है कि इसका करने वाला चाहे मुसलमानों में से हो जहन्नम के एक हिस्से पर (जिसको हदीस में जसर–ए–जहन्नम कहा गया है) उस समय तक के लिये अवश्य क़ैद में रखा जाएगा जब तक कि जल भुन कर अपने इस गुनाह की गन्दगी से पाक साफ़ न हो जाए। जिस तरह कि सोना उस समय तक आग पर रखा जाता है जब तक कि उसका पूरा मैल ख़त्म न हो जाए। हदीस के ज़ाहिरी लफ़्ज़ों से ये मालूम होता है कि ये गुनाह अल्लाह के यहां माफ़ी के क़ाबिल नहीं हैं। लेकिन आज हम मुसलमानों का हमारे ख़ास लोगों तक का ये मज़ेदार काम है।

हज़रत अबू दर्दा (रज़ि0) से रिवायत है कि मैने रसूलुल्लाह (स0अ) से सुना है आप फ़रमाते थे कि जब कोई मुसलमान अपने किसी मुस्लिम भाई की आबरू पर होने वाले हमले का जवाब दे (और उसकी तरफ़ समाप्ति करे) तो ये अल्लाह तआला का ज़िम्मा होगा कि वो क़यामत के दिन जहन्नम की आग को उससे दूर करे..... फिर सनद के तौर पर) आपने ये आयत तिलावत फ़रमायीः (अनुवादः और हमारे ज़िम्मे है ईमान वालों की मदद करना)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 03 | March 2023 | Volume: 15

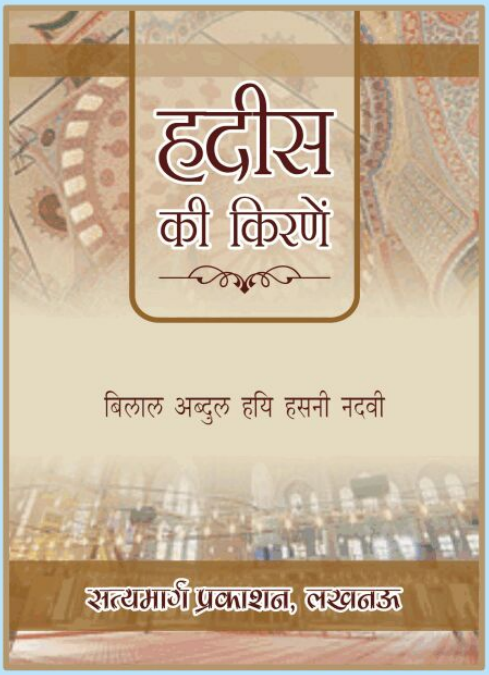

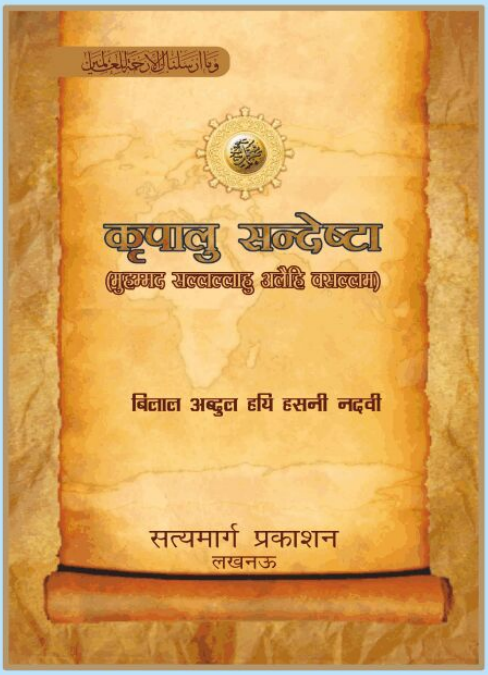

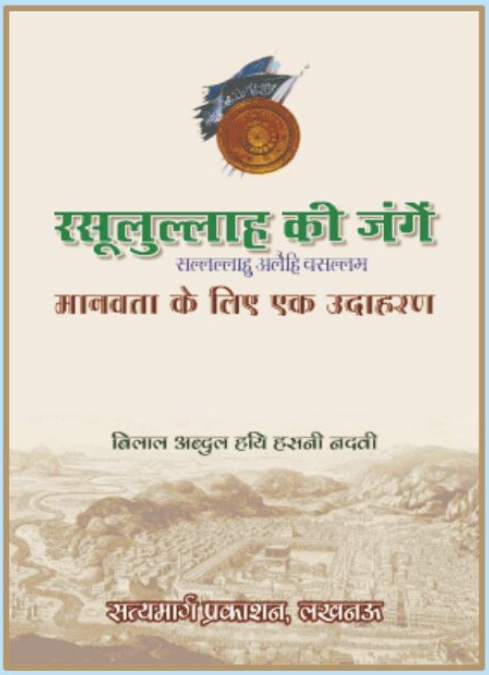

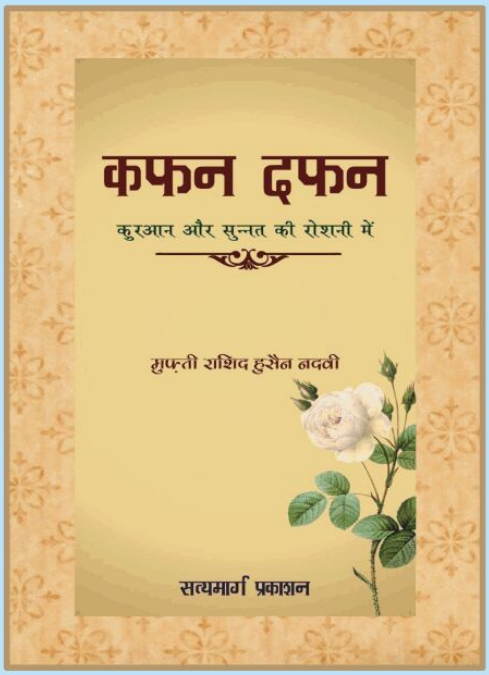

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.